वर्ष-35, अंक-396

संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से प्रकाशित साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, अक्तूबर—2023, RNI-50756

आदर्श साहित्यिक आयोजन...

अपनी बात...

श्रीनाथद्वारा के साहित्यिक आयोजन से लौट कर आया तो यह जानने की उत्कट इच्छा हुई कि श्री नाथ जी के अलावा वह कौन सी शक्ति है जिसने इस मरुभूमि में साहित्यिक दीप्ति उज्ज्वल की हुई है जिसका आलोक अब तक अक्षुण्ण बना हुआ है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार श्री श्याम प्रकाश देवपुरा के पिता जी स्वर्गीय भगवती प्रसाद देवपुरा जी वह प्रकाश पुंज हैं जिनकी मेहनत, परिश्रम और साहित्यिक लगन के चलते यह आयोजन विगत कई वर्षों से सुचारू रूप से जारी है।

कृपया पढ़ें, स्वर्गीय भगवती प्रसाद देवपुरा पर लिखी गई एक संक्षिप्त टिप्पणी जो उनके जानकार श्रीकृष्ण जुगनू ने लिखी थी :

"आज सूर जयंती है (जन्म : वैशाख शुक्ला 5 वि.1535) और मुझे याद आ रहे हैं आदरणीय श्री भगवतीप्रसाद जी देवपुरा। मेरे नाथद्वारा के साहित्य मंडल के प्रधान। उन्होंने महाकवि सूरदास कृत सूरसागर का सम्पूर्ण अनुवाद किया है। बहुत सुंदर और सरस भाषा और सचित्र प्रकाशन। नाथद्वारा में अष्टछाप सखाओं के कीर्तन का गान होता है और हिंदी की यह कीर्तन संपदा यहां राग रागिनियों सहित नियमित गाई जाती है। यहां के कीर्तनकारों को सूर सहित सभी कीर्तनकारों के समस्त पदों की राग रागिनियां, गायन समय, अवसर, ऋतु, उत्सव, दर्शन आदि सब के सब मुखाग्र हैं।

आदरणीय देवपुरा साहब ने गो. विट्ठलनाथ जी, छितस्वामी, कृष्णदास, नंददास, परमानंददास आदि के संग्रहों का सानुवाद संपादन किया तो एक दिन मैंने रागबद्ध आग्रह किया : अब तो बाउजी सूर उबारो...! आपको महासागर करना है! यह भारत और भक्तों की सेवा होगी। अन्य अनेक मित्रों का भी समय समय पर आग्रह था ही। अग्रज पुरुषोत्तमजी उन्हें याद दिलाते रहे और एक रात निद्रा को तिलांजलि देकर सूरसागर का संकल्प किया। पूरा ग्रंथ अनुवाद हुआ : बरस पर कई महीने और कई दिन पर घड़ियां और पल!

एक दिन चौपाटी पर श्रीविष्णुकांतजी के साथ चर्चा हुई तो बोले आधा काम हो गया। साहित्य मंडल के हीरक जयंती ग्रंथ के साथ यह मेवाड़ ही नहीं देश के हिंदी साहित्य का बड़ा काम हुआ। लगभग ढाई हजार पन्नों का।

एक खंड छप कर आया। उनके पुत्र चि. श्यामजी अपना सब काम छोड़कर जुटे। और, इसी तरह दूसरा खंड तैयार हुआ। बाउजी भयंकर बीमार पड़ गए। एक दिन फोन पर रुंधे गले से बोले : पता नहीं, सूरसागर होगा कि नहीं! मैंने कहा : यह काम आपका है और आपसे ही होना है। आयुष्य इसी काम के लिए मिला है! श्यामजी उन दिनों की बातें सुनाते हुए गदगद हो जाते हैं और मैं गर्व करता हूं कि जिस मेवाड़ में सूरसागर सहित अष्ट छापसखा के कीर्तनों का रागों सहित संग्रह कृष्णानंद ने किया, उसी मेवाड़ में सूरसागर का सुवर्ण कलम चित्रांकन हुआ और हम सभी के लिए सरल, सुबोध अनुवाद हुआ!

देवपुराजी का यह योगदान अपूर्व और अद्वितीय है। उनके इस अवदान पर विश्व विद्यालयों में चर्चा अभी शेष है। मैंने डॉ. रामचंद्र शुक्ल, बाबू श्यामसुंदर दास, हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि को नहीं देखा लेकिन बाबूजी के रूप में हिंदी की विभूतियों को एकीकार देखा जिन्होंने सूरसागर का काम पूरा करके कहा था : अब कह सकता हूं : सूर सूर तुलसी ससि...! और, मैं कहता था कि आपने "प्रसाद" नाम सार्थक कर दिया! नंदनंदन श्रीनाथजी मेवाड़ में व्रजधाम लाए और आपने ब्रजभाषा में मेवाड़ का शीर्ष योगदान तय कर दिया है।"

सादर,

सुधेन्दु ओझा

संपर्क भाषा भारती

प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा

दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारतीय

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

आशा शैली : शैलसूत्र त्रैमासिक पत्रिका —सम्पादन

इन्दिरा नगर-2, लाल कुआं, हल्द्वानी-263402 उत्तराखंड

फोन नंबर : 7055336168/9456717150

ईमेल : sha.shaili@gmail.com

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

अक्तूबर——2023

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	सभा/समाचार	डाक विभाग वाराणसी	7
3	सभा/समाचार	सिद्धेश्वर की कलाकृतियाँ	8
4	कविता	दीपक कुमार	8
5	एक आदर्श साहित्यिक आयोजन : श्रीनाथद्वारा	संपादकीय कक्ष	10-30
6	साहित्यमंडल की पृष्ठभूमि : श्यामप्रकाश देवपुरा	डॉ प्रभात कुमार सिंघल	31-32
7	कविता	डॉ वीरेंद्र प्रसाद	32
8	आज भी प्रासंगिक हैं महात्मा गांधी के विचार	कृष्ण कुमार यादव	33-38
9	कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	39-40
10	लघुकथाएँ	नीरू मित्तल	40
11	अनुकरणीय भगवान श्री राम	पद्मा अग्रवाल	41-42
12	कविता	डॉ राजीव गुप्ता	42
13	न्याय और नमक की कीमत सनातन के संदर्भ में	शशिबिंदु मिश्र	43
14	क्रांतिकारियों की रक्षक बनीं दुर्गा भाभी	अकांक्षा यादव	45-48
15	कविता	महेंद्र अलंकार	48
16	कविता	डॉ शरद श्रीवास्तव शरद	49
17	कविता	परमहंस तिवारी	49
18	गोपाल कृष्ण की तमिल कहानी : बड़े लेखक	अनुवाद: एस भगयम शर्मा	51-52
19	कविता	संजय कुमार सिंह	52
20	कहानी : एक बार फिर	रेणु गुप्ता	54-58
21	कविता	कंचन सिंह परिहार	60
22	कविता	संतोष कुमार 'प्रीत'	60
23	कविता	केशव शरण	61
25	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्र	63
26	साहित्य का वर्तमान परिवेश	रामानुज अनुज	65-66
27	कविता	विकास तिवारी	66
28	कविता	विकास पाण्डेय 'विदीप्त'	67
29	कविता	संतोष कुमार 'प्रीत'	67
30	सुनो राधिके सुनो : पुस्तक समीक्षा		69

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

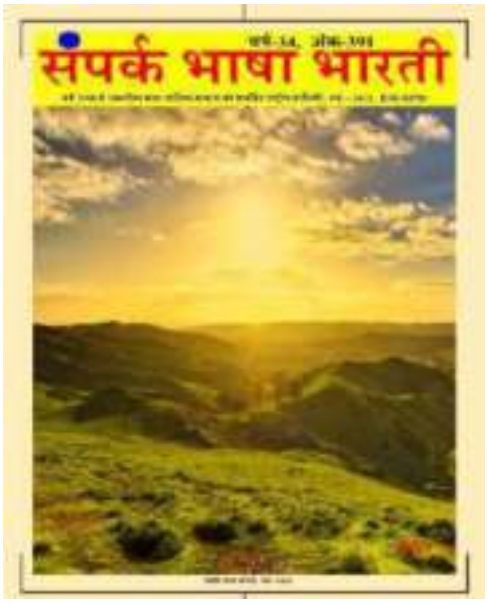

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

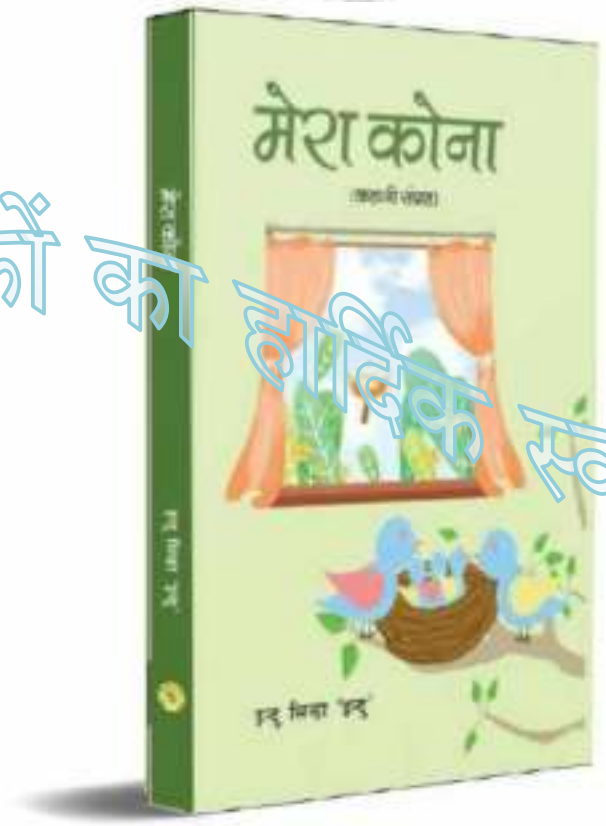

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)
Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'
ISBN : 978-81-958985-1-0
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250/-
Genre : Prose /गद्य

कथा जगत के उदीयमान महिला कथा लेखिकाओं में इन्दु सिन्हा "इन्दु" खासा परिचित नाम हैं। इससे पहले कि मैं इस संकलन में प्रस्तुत कहानियों का विस्तृत उल्लेख करूँ मुझे लगता है कि लेखिका की कहानियों और उसके लेखन की पृष्ठभूमि पर तनिक चर्चा अवश्य कर ली जाय। लेखिका अपनी कहानियों को बहुत सहजता से अपने इर्दगिर्द से उठाती है उसने आत्मकथ्य में एण्डर्सन के कथन का उल्लेख भी किया है जिसमें लेखक कहता है कि 'स्वयं जीवन जिनका सृजन करता है उनसे श्रेष्ठ किस्से कहानियाँ नहीं होतीं।' बस इसी कथ्य के बाद से लेखिका का रचना संसार शुरू होता है।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सभा समाचार

“हिंदी, भारतीय परंपरा, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक” - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

डाक विभाग द्वारा हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

“हिंदी की सबसे बड़ी ताक़त इसकी मौलिकता व सरलता”
- पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

हिंदी भारतीय परंपरा, जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक है। इसके प्रचार-प्रसार से देश में एकता की भावना और सुदृढ़ होगी। सृजन एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी दुनिया की अग्रणी भाषाओं में से एक है। ऐसे में हिंदी में गर्व से कार्य करने और अपनी भाषा को समृद्ध करने में सभी को योगदान देना होगा। उक्त उद्गार वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने डाक विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस और तदनुसार आरम्भ हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ करते हुए किया। इससे पूर्व उन्होंने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर और दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का शुभारम्भ किया।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि अनेकता में एकता को स्थापित करने की सूत्रधार 'हिन्दी भाषा' भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है,इसकी सबसे बड़ी ताक़त इसकी मौलिकता और सरलता है। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है।

आज संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है।

सहायक निदेशक राजभाषा श्री बृजेश शर्मा ने बताया कि डाक विभाग की ओर से 14 से 29 सितंबर तक आयोजित हिंदी पखवाड़े में तमाम प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा।

कार्यक्रम में सहायक निदेशक राजभाषा बृजेश शर्मा, आरके चौहान, लेखाधिकारी प्लाबन नस्कर, सहायक लेखाधिकारी संतोषी राय, डाक निरीक्षक श्रीकान्त पाल, रमेश यादव, श्रीप्रकाश गुप्ता, राकेश कुमार, विवेक कुमार, मनीष कुमार, रामचंद्र, सहित तमाम तमाम विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन शंभु प्रसाद गुप्ता ने किया।

(ब्रजेश शर्मा)
सहायक निदेशक
कार्यालय - पोस्टमास्टर जनरल
वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी -221002

सिद्धेश्वर की 75 कलाकृतियां

साहित्य अमृत के कहानी विशेषांक में सिद्धेश्वर की 75 कलाकृतियां

नई दिल्ली के प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित राष्ट्रीय मासिक पत्रिका "साहित्य अमृत" के वृहद और ऐतिहासिक कहानी विशेषांक (अगस्त 2023 अंक) में, पटना के ख्याति प्राप्त कवि, चित्रकार सिद्धेश्वर के बनाए हुए 75 रेखाचित्र प्रकाशित हुए हैं l देश की किसी भी पत्रिका में प्रकाशित होने वाली, किसी एक चित्रकार की इतनी अधिक संख्या में चित्रों का प्रकाशन, अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है l इसके पहले भी देहरादून से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'आधारशिला' में सिद्धेश्वर के बनाए गए 55 रेखाचित्र (कलाकृति) प्रकाशित किए गए थे l साहित्य अमृत के 268 पृष्ठ की इस कहानी विशेषांक में प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, गुरुदत्त, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर, धर्मवीर भारती, मन्नू भंडारी, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, रामदरश मिश्र,चंद्रकांता,, चित्रा मुद्गल, उषा किरण खान,, मालती जोशी,ऊषा यादव, गिरिजा माधव, कमलेश भारतीय, सुभाष चंद्र,विपिन चौधरी, सुभाष नीरव, विवेक मिश्र, अलका सिंहा, शशिकांत जोशी, प्रकाश मनु आदि कथाकारों की कहानियों के साथ सिद्धेश्वर के रेखाचित्र सुशोभित है l अमर कथाकारों एवं देश के ख्याति प्राप्त कथाकारों की कहानियों के साथ अपनी रेखाचित्र प्रकाशित देख सिद्धेश्वर अपने मित्रों, पाठकों और शुभचिंतकों को धन्यवाद देते है। राज प्रिया रानी द्वारा ली गई एक भेंटवार्ता में सिद्धेश्वर ने कहा है कि " साहित्यिक सृजन के बीच, हमारे रेखाचित्रों को , देश भर के अधिकांश पाठकों और दर्शकों ने सराहा है और भरपूर प्यार दिया है। मैं अपनी कलाकृतियों के प्रति जीवन भर ऋणी रहूंगा।" सिद्धेश्वर की तीन हज़ार से अधिक रेखाचित्र और कलाकृतियां देश-विदेश की 1000 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है और आज भी उनके द्वारा सृजित कलाकृति और रेखाचित्रों का प्रकाशन निरंतर जारी है l हंस , वीणा , जनपथ, नूतन कहानियां जैसी मुख्यधारा की पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ पर भी सिद्धेश्वर की कलाकृतियां ससम्मान प्रकाशित होकर चर्चा के केंद्र में रही है l आजकल, वागर्थ, कथादेश, नवनीत, समकालीन भारतीय साहित्य, नया ज्ञानोदय, नई धारा , हिंदुस्तान, हरिगंधा, हस्ताक्षर, रचना उत्सव, कला समय आदि सैकड़ों मुख्यधारा की पत्र पत्रिकाओं में सिद्धेश्वर के रेखाचित्र निरंतर सम्मानजनक स्थान पा रही है l इतना ही नहीं सैकड़ों पुस्तकों के मुखपृष्ठ पर भी सिद्धेश्वर की कलाकृतियां प्रकाशित होकर चर्चा के केंद्र में रही है l इसी माह इंदौर से प्रकाशित योगेंद्र नाथ शुक्ला की अंग्रेजी और गुजराती लघुकथा पुस्तक के मुखपृष्ठ पर सिद्धेश्वर की कलाकृति प्रकाशित हुई है l सिद्धेश्वर द्वारा 25 बार लघुकथा कविता पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ है l विख्यात चित्रकार आनंदी प्रसाद बादल उनके चित्रों के संदर्भ में कहते हैं कि निराकार में आकर एवं शब्दों में चिंतन को पा लेना बड़ी बात है l ऐसे में सिद्धेश्वर जी का यह प्रयास अपने आप में अनोखा पा रहा हूं, जो बड़ी बात है l वहीं भगवती प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि सिद्धेश्वर की कलाकृति अपने आप में अद्भुत है l कवि गुरु रविंद्र नाथ ठाकुर हो या महायशी महादेवी वर्मा, कविता और चित्रांकन के बीच समन्वय स्थापित कर दोनों ही विधाओं को पूर्णता प्रदान की है l ऐसे ही चंद कवि चित्रकारों में सिद्धेश्वर भी आते हैं l रशीद गौरी के अनुसार - अपने भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कोई संवेदनशील व्यक्ति कलम उठाता है तो कोई कुंची थाम लेता है l यह सिद्धेश्वर जी का सौभाग्य है कि उनके पास यह दोनों है l ईश्वर प्रदत्त एक नयाब तोहफा है सिद्धेश्वर द्वारा सृजित कविताएं और कलाकृतियां l

ऋचा वर्मा

शिवरतन बड़बड़ा रहा था
बुखार में
धूप तेज थी, लग गयी।
गर्म तावे सी देह
ठंडी नब्ज
सिरहाने लोहे की तपती कुदाल
शिवरतन बदहाल
खाट पर फड़फड़ा रहा था
धूप तेज थी, लग गयी
और इधर मैं हाथ, पैर, रीढ़ की
हड्डियों में दर्द से परेशान
ढूंढता इलाज
छानता हूँ खाक।
डाक्टर कहते हैं.....
विटामिन डी नहीं है
मेरे खून में धूप की कमी है।
अब जाकर हुआ कुछ संतोष
कहता है मन निर्दोष
चलो कुछ तो अधिक है मुझसे
शिवरतन के पास
और कुछ नहीं
तो धूप ही सही।

दीपक कुमार

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-9-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 188
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

एक आदर्श साहित्यिक आयोजन...

"**दादा** आप नाथद्वारा गए हो कभी?" मुझे याद है, जब राजस्थान से हिन्दी की प्रतिष्ठित साहित्यकारा सुश्री आशा पाण्डेय ओझा ने मुझसे यह पूछा था तो मैंने इंकार कर दिया था।

"फिर आप ऐसा करो, श्याम प्रकाश देवपुरा जी को अपना परिचय व्हाट्सेप पर भेज दो। उनका नंबर मैंने आप को भेज दिया है।" आशा ने मुझे हिदायत दी।

सुश्री आशा पाण्डेय ओझा इस आयोजन में साहित्यकारों का सारस्वत सम्मान भी करती हैं। इस बार उन्हों ने मेरे नाम का प्रस्ताव किया था।

यह बात शायद मार्च 2023 की रही होगी।

मैं शायद आशा की इस हिदायत पर अमल न कर पाया था क्योंकि 15–20 दिन के बाद फिर उनका फोन था कि "दादा! आपने अपना परिचय अभी तक उन्हें नहीं भेजा है।"

अब की मैंने आशा के कहे अनुरूप तुरंत ही श्याम प्रकाश देवपुरा जी को अपना संक्षिप्त परिचय भेज दिया।

और इस भांति मुझे न केवल श्री नाथद्वारा जी के वर्तमान स्वरूप, साहित्यमंडल नाथद्वारा (स्थापित वर्ष : 1937) और श्री श्याम प्रकाश देवपुरा उनके पिता स्वर्गीय भगवती प्रसाद देवपुरा जी के द्वारा प्रत्येक वर्ष अनवरत किए जा रहे तीन साहित्यिक अनुष्ठानों के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ बल्कि 14-15 सितंबर 2023 को देश के विभिन्न स्थानों से पधारे लगभग 200 साहित्यकारों को भी जानने और सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

नई दिल्ली से श्रीनाथद्वारा :

साहित्यमंडल, श्री नाथद्वारा के साहित्यिक अनुष्ठानों से परिचित होने से पूर्व आइए पहले श्रीनाथद्वारा जी से परिचित हो लेते हैं :

श्रीनाथजी श्रीकृष्ण भगवान के 7 वर्ष की अवस्था के रूप हैं। श्रीनाथजी भगवान कृष्ण का एक रूप हैं, जो सात साल के बच्चे (बालक) के रूप में प्रकट होते हैं।

श्रीनाथद्वारा मंदिर राजस्थान के उदयपुर शहर से 49 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है।

दिल्ली से यहाँ तक पहुँचने के लिए हमने मेवाड़ एक्स्प्रेस ट्रेन पकड़ी जो कि हज़रत निज़ामुद्दीन स्टेशन से प्रति दिन, साँय 18.25 पर उदयपुर के लिए रवाना होती है।

श्रीनाथद्वारा शहर पहुँचने के लिए हमें उदयपुर से दो स्टेशन पहले, मावली जंक्शन पर उतरना था।

दिल्ली से पिछली शाम को चली मेवाड़ एक्स्प्रेस यहाँ सुबह 06.00 बजे पहुँच जाती है।

मावली जंक्शन से लगभग 27.6 किलोमीटर दूर श्रीनाथद्वारा शहर है।

श्री श्यामप्रकाश देवपुरा ने अतिथियों के लिए एक मिनी बस की व्यवस्था की हुई थी।

श्रीनाथ जी 'संप्रदाय' की पृष्ठभूमि :

श्रीनाथजी वैष्णव सम्प्रदाय के केंद्रीय पीठासीन देव हैं जिन्हें पुष्टिमार्ग (कृपा का मार्ग) या वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित वल्लभ सम्प्रदाय के रूप में जाना जाता है।

श्रीनाथजी को मुख्य रूप से भक्ति योग के अनुयायियों और गुजरात और राजस्थान में वैष्णव और भाटिया सहित सभी सनातनी हिंदुओं तथा अन्य लोगों द्वारा पूजा जाता है।

वल्लभाचार्य के पुत्र विठ्ठलनाथजी ने नाथद्वारा में श्रीनाथजी की पूजा को संस्थागत रूप दिया। श्रीनाथजी की लोकप्रियता के कारण, नाथद्वारा शहर को 'श्रीनाथजी' के नाम से जाना जाता है। लोग इसे बावा की (श्रीनाथजी बावा) नगरी भी कहते हैं। प्रारंभ में, बाल कृष्ण रूप को देवदमन (देवताओं का विजेता - कृष्ण द्वारा गोवर्धन पहाड़ी के उठाने में इंद्र की अति-शक्ति का उल्लेख) के रूप में संदर्भित किया गया था। वल्लभाचार्य ने उनका नाम गोपाल रखा और उनकी पूजा का स्थान 'गोपालपुर' रखा। बाद में, विट्ठलनाथजी ने उनका नाम श्रीनाथजी रखा। श्रीनाथजी की सेवा दिन के 8 भागों में की जाती है।

पुष्टिमार्ग के अनुयायी बताते हैं कि स्वरूप का हाथ और चेहरा पहले गोवर्धन पहाड़ी से उभरा था और उसके बाद माधवेंद्र पुरी के आध्यात्मिक नेतृत्व में स्थानीय निवासियों (व्रजवासियों) ने गोपाल (कृष्ण) देवता की पूजा शुरू की। इन्हीं गोपाल देवता को बाद में श्रीनाथजी कहा गया। इस प्रकार, माधवेन्द्र पुरी को गोवर्धन के पास गोपाल देवता की खोज के लिए मान्यता दी जाती है, जिसे बाद में वल्लभाचार्य द्वारा श्रीनाथजी के रूप में

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुआवज़ा

Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी

ISBN : 978-81-958985-2-7

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250

Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

अनुकूलित और पूजा गया। प्रारंभ में, माधवेंद्र पुरी ने देवता के ऊपर उठे हुए हाथ और बाद में, चेहरे की पूजा की।

पुष्टिमार्ग साहित्य के अनुसार, श्रीनाथजी ने श्री वल्लभाचार्य को हिंदू विक्रम संवत 1549 में दर्शन दिए और वल्लभाचार्य को निर्देश दिया कि वे गोवर्धन पर्वत पर पूजा शुरू करें। वल्लभाचार्य ने उन देवता की पूजा के लिए व्यवस्था की, और इस परंपरा को उनके पुत्र विठ्ठलनाथजी ने आगे बढ़ाया।

सिहाड़ गाँव से श्री नाथद्वारा :

9 अप्रैल 1669 को औरंगजेब ने हिंदू मंदिरों को तोड़ने के लिए आदेश जारी किया। अनेक मंदिरों की तोडफ़ोड़ के साथ वृंदावन में गोवर्धन के पास श्रीनाथ जी के मंदिर को तोड़ने का काम भी शुरू हो गया। मान्यता है कि इससे पहले कि श्रीनाथ जी की मूर्ति को कोई नुक्सान पहुंचे, मंदिर के पुजारी दामोदर दास बैरागी ने मूर्ति को मंदिर से बाहर निकाल लिया।

दामोदर दास बैरागी वल्लभ संप्रदाय के थे और वल्लभाचार्य के वंशज थे। उन्होंने बैलगाड़ी में श्रीनाथजी की मूर्ति को स्थापित किया और उसके बाद वह बूंदी, कोटा, किशनगढ़ और जोधपुर तक के राजाओं के पास आग्रह लेकर गए कि श्रीनाथ जी का मंदिर बनाकर उसमें मूर्ति स्थापित की जाए। लेकिन औरंगजेब के डर से कोई भी राजा दामोदर दास बैरागी के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर रहा था।

कोटा से 10 किमी दूर श्रीनाथ जी की चरण पादुकाएं आज भी रखी हुई है, उस स्थान को चरण चौकी के नाम से जानते हैं। तब दामोदर दास बैरागी ने मेवाड़ के राजा राणा राज सिंह के पास संदेश भिजवाया। राणा राजसिंह पहले भी औरंगजेब से विरोध ले चुके थे। जब किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती से विवाह करने का प्रस्ताव औरंगजेब ने भेजा तो चारुमती ने इससे साफ इंकार कर दिया और रातों-रात राणा राजसिंह को संदेश भिजवाया कि चारुमती उनसे शादी करना चाहती है। राणा राजसिंह ने बिना कोई देरी के किशनगढ़ पहुंचकर चारुमती से विवाह कर लिया।

इससे औरंगजेब का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया और वह राणा राजसिंह को अपना सबसे बड़ा शत्रु समझने लगा। संभवतः, यह बात 1660 की है। यह दूसरा मौका था जब राणा राजसिंह ने खुलकर औरंगजेब को चुनौती दी और कहा कि "मेरे रहते हुए श्रीनाथजी की मूर्ति को कोई छू तक नहीं पाएगा।"

उस समय श्रीनाथजी की मूर्ति बैलगाड़ी में

जोधपुर के पास चौपासनी गांव में थी और चौपासनी गांव में कई महीने तक बैलगाड़ी में ही श्रीनाथजी की मूर्ति की उपासना होती रही। यह चौपासनी गांव अब जोधपुर का हिस्सा बन चुका है और जिस स्थान पर यह बैलगाड़ी खड़ी थी वहां आज श्रीनाथजी का एक मंदिर बनाया गया है। 5 दिसंबर 1671 को सिहाड़ गांव में श्रीनाथ जी की मूर्तियों का स्वागत करने के लिए राणा राजसिंह स्वयं सिहाद गांव गए। यह सिंहाड गांव उदयपुर से 30 मील एवं जोधपुर से लगभग 140 मील की दूरी पर स्थित है जिसे आज हम नाथद्वारा के नाम से जानते हैं।

20 फरवरी 1672 को मंदिर का निर्माण संपूर्ण हुआ और श्रीनाथ जी की मूर्ति सिहाड़ गांव के मंदिर में स्थापित कर दी गई। यही सिहाड़ गांव अब नाथद्वारा बन गया।

नाथद्वारा में श्रीनाथजी जी अथवा ठाकुर जी की हवेली : श्रीनाथजी की पिछवई

श्रीनाथजी की एक छोटी सी नगरी! बनास नदी के तट पर स्थित एक ऐसी नगरी जहाँ नाथद्वारा एवं श्रीनाथजी समानार्थी हो जाते हैं। सम्पूर्ण नगरी 'ठाकुर जी की हवेली' के चारों ओर बसती है।

'ठाकुर जी की हवेली'! जी हाँ, नाथद्वारा मंदिर को भक्तगण इसी नाम से पुकारते हैं। यह मंदिर विष्णु के कृष्ण अवतार के श्रीनाथजी स्वरुप को समर्पित है। नाथद्वारा एक प्रकार से ब्रज भूमि का इस नगरी में अवतरण है। जी हाँ, कृष्ण एवं कृष्णलीला की भूमि, ब्रज भूमि का छोटा प्रतिरूप है नाथद्वारा।

कृष्ण का श्रीनाथजी अवतार :

श्रीनाथजी की प्रतिमाओं तथा चित्रों में उन्हें सदैव गोवर्धन पर्वत को अपने बाएं हाथ की कनिष्ठा से उठाये तथा दायाँ हाथ कटि पर जमाये दिखाया जाता है। यह चित्रण उस घटना की स्मृति में है जब कृष्ण ने इंद्र का गर्व चूर करने के लिए गोवर्धन पर्वत को बाएं हाथ की कनिष्ठा पर उठाया था तथा अतिवृष्टि के प्रकोप से बचाने के लिये ब्रजवासियों को उसके नीचे शरण दी थी। इसी घटना के कारण कृष्ण को गोवर्धन गिरिधारी भी कहा जाता है। गोवर्धन गिरिधारी अर्थात् गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले!

नाथद्वारा में कृष्ण को बाल रूप में पूजा जाता है। ठाकुरजी की हवेली के सर्व क्रियाकलाप एक 7 वर्षीय बालक के चारों ओर केन्द्रित रहते हैं। उनसे ठीक वैसा ही व्यवहार किया जाता है जैसे एक माता अपने बालक से

करती है। जैसे माता अपने बालक का श्रृंगार करती है, उसे भोजन कराती है। नगरवासियों के लिए यह एक मंदिर नहीं, अपितु श्रीनाथजी का निवास स्थान है। इसीलिए वे इसे मंदिर नहीं, अपितु ठाकुरजी की हवेली कहते हैं।

माना जाता है कि प्रतिमा ले जाते हुए रथ, यात्रा करते समय मेवाड़ के सिहाड़ गांव में कीचड़ में फंस गया था, और इसलिए मूर्ति की स्थापना मेवाड़ के तत्कालीन राणा की अनुमति के साथ एक मंदिर में की गई थी। धार्मिक मिथकों के अनुसार, नाथद्वारा में मंदिर का निर्माण 17 वीं शताब्दी में श्रीनाथजी द्वारा स्वयं चिन्हित किए गए स्थान पर किया गया था।

मंदिर को लोकप्रिय रूप से श्रीनाथजी की हवेली (श्रीनाथजी का घर) भी कहा जाता है क्योंकि एक नियमित गृहस्थी की तरह इसमें रथ की आवाजाही होती है (वास्तव में मूल रथ जिसमें श्रीनाथजी को सिंघार लाया गया था), दूध के लिए एक स्टोर रूम (दूधघर), सुपारी के लिए एक स्टोर रूम (पानघर), चीनी और मिठाइयों के लिए एक स्टोर रूम (मिश्रीघर और पेड़ाघरघर), फूलों के लिए एक स्टोर रूम (फूलघर), एक कार्यात्मक रसोई (रासीघर), एक आभूषण कक्ष (गहनाघर),

एक खजाना (खारचा भंडार), रथ (अश्वशाला) के घोड़ों के लिए एक स्थिर, एक ड्राइंग रूम (बैठक), एक सोने और चांदी का पहिया (चक्की)।

दुनिया भर में कई प्रमुख मंदिर हैं जहां श्रीनाथजी की पूजा होती है। ऐसा कथन है कि पश्चिमी गोलार्ध के "नाथद्वारा" को व्रज के नाम से जाना जाता है। यह श्युल्किल हैवेन (Schuylkill Haven), पेंसिलवेनिया (Pennsylvania) संयुक्त राज्य अमरीका में स्थित है। एक वर्ष में 100,000 से अधिक हिंदू व्रज की यात्रा करते हैं। मंदिर के पुजारियों और सेवकों को उनके कर्तव्यों के प्रतिफल के रूप में, वेतन के स्थान पर प्रसाद दिया जाता है। अक्सर यह प्रसाद उन मेहमानों को दिया या बेचा जाता है जो दर्शन के लिए मंदिर आते हैं।

व्रज हिंदू मंदिर 1987 से पहले एक योग मनोरंजन केंद्र था। यह ज़मीन 1987 की गर्मियों में दूरदर्शी और इस मंदिर के संस्थापक गोविंद भीखाभाई शाह (काका) ने 29 अन्य लोगों के सहयोग से खरीदी थी। नवंबर 1988 में उद्घाटन पाटोत्सव समारोह के दौरान मंदिर आधिकारिक हो गया जब श्रीनाथजी ने पहली बार व्रज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

श्री नाथद्वारा मंदिर में उत्सव और अनुष्ठान :

श्रीनाथ जी मंदिर में सभी हिंदू त्यौहार धूमधाम से मनाए जाते है। मंदिर में मनाए जाने वाले मुख्य त्यौहार हैं : हरियाली अमावस्या, जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, अन्नकूट, मकर संक्रांति, प्रबोधिनी एकादशी, इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय त्योहार जैसे तीज गणगौर भी उत्साह पूर्वक मनाए जाते हैं।

इन त्यौहार के दिन श्रीनाथ जी का विशेष श्रृंगार व प्रसाद तैयार किया जाता है।

कला और संस्कृति में श्री नाथद्वारा : पिछवाई चित्रकला एवं अन्य कलात्मक क्रियाकलाप

श्रीनाथजी का हिंदू कलाओं पर महत्वपूर्ण और गहरा प्रभाव है, उनके द्वारा विकसित की गई पिछवाई चित्रों शृंखला अद्वितीय है। ये चित्र कपड़े, कागज, दीवारों या मंदिरों की झूलन के रूप में हो सकती हैं। ये बारीक एवं रंगीन भक्ति वस्त्र हैं जो श्रीनाथजी की छवि पर केन्द्रित हैं। नाथद्वारा पिचवाई कला, नाथद्वारा पेंटिंग का केंद्र है। नाथद्वारा शहर की राजस्थानी शैली के लिए जाना जाता है, जिसे "पिचवाई पेंटिंग" कहा जाता है। इन पिचवाइ चित्रों को नाथद्वारा के प्रसिद्ध समकालीन कलाकारों द्वारा नाथद्वारा मंदिर के चारों ओर की दीवार पर चित्रित किया गया है।

श्रीनाथजी की काली प्रतिमा ने एक नवीन चित्रकला की शैली को जन्म दिया जिसे पिछवाई के नाम से जाना जाता है। पिछवाई चित्रकला का अक्षरशः अर्थ है पीछे लटकाना। इन्हें नाथद्वारा चित्रकारी भी कहा जाता है क्योंकि इस प्रकार की चित्रकला का सम्बन्ध नाथद्वारा से जोड़ा जाता है।

पिछवाई चित्र बड़े आकार के चित्र होते हैं जिन्हें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर सूती कपड़ों पर किया जाता है। कृष्ण लीलाओं को चित्रित करते इन चित्रों को भगवान् श्रीनाथ जी की प्रतिमा के पीछे लटकाया जाता है। जब आप यहाँ की सड़कों में घूमेंगे तब आपको यहाँ कई चित्रकार कागज, लकड़ी अथवा कपड़े पर चित्रकारी में मग्न दृष्टिगोचर होंगे। इन चित्रों की विषय-वस्तु सदैव श्रीनाथजी ही होते हैं। पिछवाई चित्रकारी की शैली को मेवाड़ के सूक्ष्म चित्रकारी शैली की ही एक शाखा माना जाता है। अंतर केवल चित्रकारी का माध्यम है जो पिछवाई चित्रकला में कपड़ा है।

इस चित्रकला में मुख्यतः काले एवं सुनहरे रंगों का प्रयोग किया जाता है।

कहा जाता है कि मुगल साम्राज्य के समय मूर्तिपूजा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

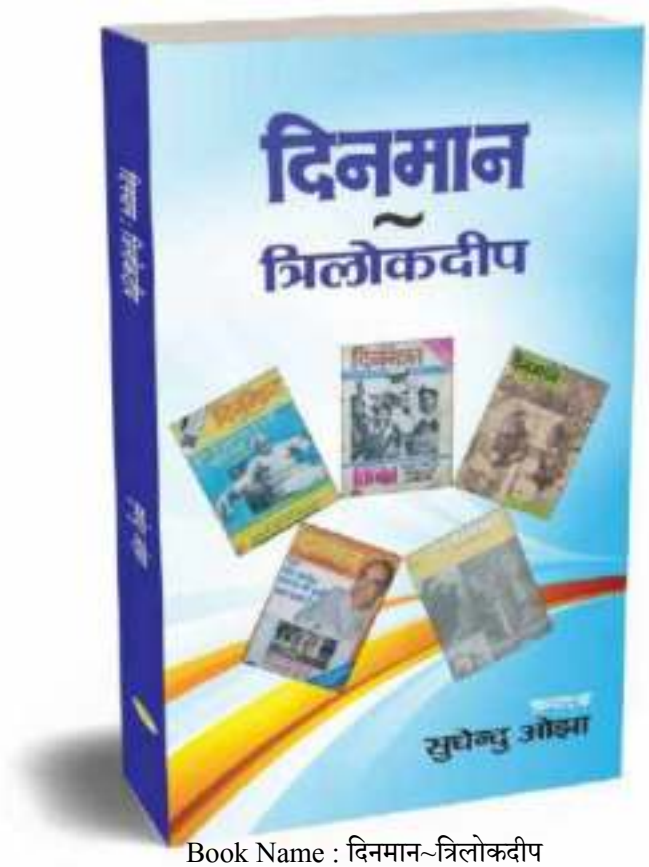

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

भक्तगण श्रीनाथजी की छवि को रंगों द्वारा कपड़ों पर उतारते थे एवं उनकी पूजा करते थे। कालान्तर में यह चित्रकला शैली एक महत्वपूर्ण कला शैली में परिवर्तित हो गयी।

पूजन :

श्री नाथ जी की मुख्य 6 चरण चौकियों में से एक कि पूजा राजस्थान के ही कोटा में की जाती है। यहाँ श्री नाथ जी सवंत 1726 में पधारे थे। राजस्थान में श्री नाथ जी की 6 चरण चौकियों में से 4 उपस्थित हैं। राजस्थान में 352 साल पुरानी ये चरण चौकी कोटा से 18 किमी दूर डाढ़ देवी मार्ग पर मोतीपुरा नामक स्थान पर उपस्थित हैं।

राजस्थान का श्रीनाथद्वारा शहर पुष्टिमार्गिय वैष्णव सम्प्रदाय का प्रधान पीठ है जहाँ भगवान श्रीनाथजी का विश्व प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। प्रभु श्रीजी का प्राकट्य ब्रज के गोवर्धन पर्वत पर जतिपुरा गाँव के निकट हुआ था। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने यहाँ जतिपुरा गाँव में मंदिर का निर्माण करा सेवा प्रारंभ की थी।

भारत के मुगलकालीन शासक बाबर से लेकर औरंगजेब तक का इतिहास पुष्टि संप्रदाय के इतिहास के समानान्तर यात्रा करता रहा। सम्राट अकबर ने पुष्टि संप्रदाय की भावनाओं को स्वीकार किया था। मंदिर गुसाईं श्री विट्ठलनाथजी के समय सम्राट की बेगम बीबी ताज तो श्रीनाथजी की परम भक्त थी तथा तानसेन, बीरबल, टोडरमल तक पुष्टि भक्ति मार्ग के उपासक रहे थे। इसी काल में कई मुसलमान रसखान, मीर अहमद इत्यादि ब्रज साहित्य के कवि श्रीकृष्ण के भक्त रहे हैं।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने यहाँ तक कहा है- "इन मुसलमान कवियन पर कोटिक हिन्दू वारिये" किन्तु मुगल शासकों में औरंगजेब अत्यन्त असहिष्णु था। वह हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां तोड़ने का कठोर आदेश दिया करता था। उसकी आदेशों से हिन्दूओं के सेव्य विग्रहों को खण्डित होने लगे। मूर्तिपूजा के विरोधी इस शासक की वक्र दृष्टि ब्रज में विराजमान श्रीगोवर्धन गिरि पर स्थित श्रीनाथजी पर भी पड़ने की संभावना थी।

श्री नाथद्वारा से लौट जाएंगे भगवान :

जिस रथ पर सवार वे नाथद्वारा आये थे, वह रथ आप अब भी मंदिर परिसर के भीतर देख सकते हैं। श्रीनाथजी की प्रतिमा काले संगमरमर की एकल शिलाखंड पर तराशी गयी है।

भक्तों की आस्था है कि जैसे ही उनके लिए उपयुक्त मंदिर की रचना हो जायेगी, श्रीनाथजी अपनी ब्रजभूमि अथवा गोवर्धन अवश्य लौटेंगे।

श्रीनाथजी के दर्शन :

भक्तगण मंदिर में श्रीनाथजी के 8 विभिन्न दर्शन प्राप्त सकते हैं। ये 8 दर्शन बालक श्रीनाथजी के एक दिवस के 8 विभिन्न क्रियाकलापों तथा उन्हें अर्पित 8 भोजन से साम्य रखता है। कृष्ण को यहाँ एक प्रतिमा नहीं, अपितु एक जीता-जागता बालक माना जाता है। एक बालक के सामान उन्हें प्रातः उठाया जाता है, खिलाया जाता है तथा स्नान,

श्रृंगार, क्रीड़ा एवं निद्रा जैसी दैनिक क्रियाएं कराई जाती हैं। श्रीनाथजी के ये 8 दर्शन जो भक्तगण प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रकार हैं:

मंगल दर्शन

ये दिवस का प्रथम दर्शन है। इस दर्शन के लिए मंदिर के मुख्य द्वार नहीं खोले जाते क्योंकि बालक कृष्ण अभी अभी निद्रा से जागे हैं। इस समय आवश्यकता है कि बालक श्रीनाथजी का ध्यान ना भटके तथा उनका मन बाहर खेलने जाने के लिए ना मचले। इसी प्रकार बाहर एकत्र भक्तों के जमावड़े से वे विचलित भी ना हों। ऋतु के अनुसार उन्हें वस्त्र पहनाये जाते हैं, ग्रीष्म ऋतु में हलके सूती वस्त्र तथा शीत ऋतु में गर्म ऊनी वस्त्र। तत्पश्चात, रात्रि के अन्धकार की दुष्ट आत्माओं को दूर करने के लिए आरती की जाती है।

श्रृंगार दर्शन :

मंगल दर्शन के एक घंटे के उपरांत श्रीनाथजी का श्रृंगार किया जाता है। उन्हें सुन्दर वस्त्र एवं आभूषणों द्वारा अलंकृत किया जाता है। अलंकार के समय उन्हें दर्पण दिखाया जाता है ताकि वे स्वयं को निहार सकें। उन्हें सूखे मेवे तथा मिष्टान्न अर्पित किये जाते हैं। इन सबके पश्चात ही उन्हें उनकी प्रिय बांसुरी दी जाती है।

ग्वाल दर्शन :

इस समय भगवान् श्रीनाथजी को सूचना दी जाती है कि उनके गौशाला की सर्व गायें स्वस्थ हैं। श्रीनाथजी को माखन मिश्री तथा अन्य दुग्ध-जन्य खाद्य पदार्थ चढ़ाए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस समय वे अपने सखाओं के संग क्रीड़ा करते हैं।

राजभोग दर्शन :

यह सम्पूर्ण दिवस की सर्वाधिक विस्तृत आरती है जब बाल गोपाल को दिवस का प्रमुख भोज अर्पित किया जाता है। मेरा सौभाग्य था कि मैं राजभोग दर्शन के समय इस मंदिर में उपस्थित थी। सर्वत्र इत्र एवं सुगन्धित पदार्थों का छिड़काव करते हुए छत से इस दर्शन की घोषणा की जाती है। इस दर्शन के उपरांत आगामी तीन घंटे मंदिर बंद रखा जाता है ताकि भगवान् तनिक विश्राम कर सकें।

उत्थापन दर्शन :

दोपहर के समय, बाल श्रीनाथजी को, निद्रा उपरांत, शंख ध्वनि द्वारा जगाया जाता है। यह दर्शन संकेत है कि ग्वालों एवं गौओं के वापिस घर लौटने का समय हो चुका है।

भोग दर्शन :

इस दर्शन के समय स्वामिनीजी को हल्का भोजन अर्पित किया जाता है। यहाँ स्वामिनीजी राधाजी हैं या कदाचित यमुनाजी हैं। उन्हें यहाँ श्रीनाथजी के संग दर्शाया जाता

है। पुष्टि मार्ग के अनुयायी यमुना जी को ही श्रीनाथ जी की पटरानी मानते हैं।

आरती :

यह दर्शन संध्या के समय प्राप्त होते हैं जब भगवान् ग्वाले के रूप में जंगल में गाएं चराकर घर वापिस लौटते हैं। तब माता उन पर पड़ी किसी भी दुष्ट आत्मा की परछाई दूर करने हेतु उनकी आरती करती है। उन्हें हल्का भोजन अर्पित किया जाता है। उन्हें उनकी बांसुरी दी जाती है जिससे वे स्वयं एवं वहां उपस्थित लोगों का मनोरंजन करते हैं।

शयन :

अब निद्रा का समय हो चला है। इसकी घोषणा रसोइये को अगले दिवस शीघ्र आने की सूचना द्वारा की जाती है। भोजन के साथ पान-बीड़ा अर्पण किया जाता है। ये दर्शन वर्ष में केवल छः मास ही की जाती है। ऐसा मान्यता है कि वर्ष के शेष छः मास श्रीनाथजी ब्रजवासियों को दर्शन देने ब्रज चले जाते हैं।

साहित्यिक आयोजकों की धूर्तता और साहित्यकारों के भावनात्मक शोषण पर एक दृष्टि :

श्री नाथद्वारा के साहित्यिक आयोजन से पूर्व आवश्यक है कि इस प्रकार के साहित्यिक आयोजन के कुछ, कतिपय आयोजकों की धूर्तता पर भी सम्यक दृष्टिपात किया जाय।

उन दिनों मैं भेल (नोएडा) में मानव संसाधन और राजभाषा के दायित्व को भी देख रहा था। वर्ष भर के विभिन्न आयोजनों में बतौर संकाय निमंत्रित करने के लिए साथी साहित्यकारों से भी संपर्क रहा करता था। स्वर्गीय नीरज, ओमप्रकाश आदित्य, भवानी प्रसाद मिश्र, रमानाथ अवस्थी सहित सर्व श्री सोम ठाकुर, संतोषानन्द, धनंजय सिंह, देव प्रकाश चौधरी जी इत्यादि इनमें प्रमुख थे।

एक दिन एक कवि महोदय का मुझे फोन आया, 'ओझा जी! मेरे जन्म दिन पर एक आयोजन हम फलां-फलां दिन, फलां स्थान पर कर रहे हैं। आप ने अवश्य ही इस आयोजन में भाग लेना है।'

मैंने हामी भर दी।

बाद में पता चला जहां ठहरने की व्यवस्था की गई थी और जिसका भुगतान मेरे द्वारा किया गया था उसका किराया मेरे सहित सभी साथियों को बढ़ा चढ़ा कर बताया गया था सो सारा पैसा उन महोदय के खाते में गया।

हालांकि, यह राशि तुच्छ थी, किन्तु उनका आचरण उससे भी तुच्छ।

इन्हीं प्रज्ञान पुरुष सज्जन ने एक आयोजन बंगलौर में किया, उत्तराखंड से साहित्यिक सहयोगी वहाँ होटल इत्यादि का खर्च जमा करके गए। अचानक उनका कार्यक्रम बंगलौर रुकने का बढ़ गया। यह अंतिम क्षणों में उस समय हुआ जब आयोजक कार्यक्रम के बाद बंगलौर छोड़ चुके थे।

उत्तराखंड के साहित्यकारों के इस समूह ने जब आयोजक के जाने के बाद उस होटल में 2 दिन और बिताने के बाबत पूछा तो होटल वालों ने उनसे जो किराया बताया वह आधे से भी कम था जिसे वे आयोजक को दे चुके थे।

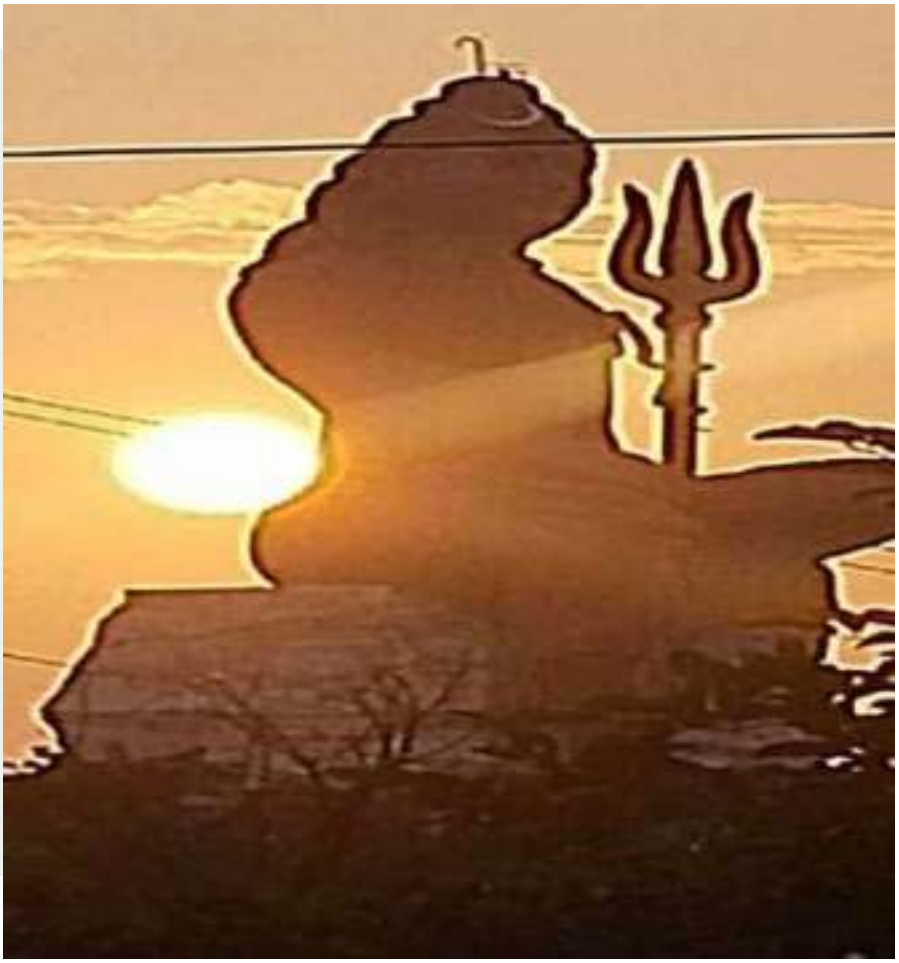

प्रज्ञान के नाम से विख्यात इन सज्जन के किस्से इस प्रकार के दोहन की किंवदंतियाँ बन गए हैं।

मेरे एक फेसबुक मित्र बने प्रसिद्ध लेखक श्री द्वारिका प्रसाद अग्रवाल, पेंडरा रोड, रायपुर के हैं।

उन्हों ने बताया कि इन सज्जन ने बिचौलिया बन कर उनकी पहली पुस्तक 50,000 रुपये लेकर छपवाई। 50,000 और मांग रहे थे पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए।

ग्वालियर से मेरे एक मित्र हैं (अब स्वर्गीय) श्री रामवरण ओझा जी।

उन्हों ने मुझसे कहा कि 'ओझा जी हम ग्वालियर में कवि सम्मेलन करते हैं, इस बार आप अवश्य पधारिएगा।' मैंने इस निमंत्रण पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

ग्वालियर आयोजन की तिथि आई और चली गई। मैंने उनसे कुछ नहीं कहा, बहुत दिनों तक वे भी चुप रहे।

एक दिन उनके आत्म-ग्लानि का घड़ा भर कर छलक गया।

मुझे फोन करके बोले 'ओझा जी आप ग्वालियर के कार्यक्रम में नहीं आसके इसके लिए मुझे ग्लानि हो रही है इसीलिए फोन कर रहा हूँ।' मैं चुप रहा। 'दरअसल इस व्यक्ति को मैंने आपके मार्ग-व्यय तथा सारस्वत सम्मान का पैसा भेज दिया था। इस व्यक्ति ने अंतिम समय पर गाज़ियाबाद की कवयित्री को बुलाने को कह कर पैसे उसे दे दिए और वह कवयित्री आई भी नहीं।' उनके इस कथन पर मैं क्या कह सकता था। फिर, उन्होने बताना शुरू किया कि किस तरह बिण्डेश्वरी पाठक के कविसम्मेलन के आयोजन में उन्हें इसी व्यक्ति द्वारा पटना ले जाया गया और वहाँ से प्राप्त पूरी धनराशि को जबरन उनसे खोंस लिया गया।

स्वर्गीय रामवरण ओझा जी बहुत सरल, सीधे, धर्मभीरु किन्तु स्नेण स्वभाव के थे। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे। अभी कुछ माह पूर्व ही उनका कैंसर से निधन हुआ है।

साहित्यमंडल श्रीनाथद्वारा साहित्यिक आयोजन : मुरैना में आयोजित एक अन्य 'साहित्यिक' आयोजन

साहित्यमंडल श्रीनाथद्वारा के साहित्यिक आयोजन के समानान्तर सितंबर मास में एक अन्य 'साहित्यिक' आयोजन किसी श्री देवेंद्र तोमर द्वारा मुरैना, मध्य प्रदेश में ध्यान का आकर्षण बना।

मैं देवेंद्र जी को तनिक जानता नहीं हूँ, बस इतना कि वे फेसबुक पर जुड़े हुए हैं। अतः, उनके कार्यक्रम के प्रति जो विवेचना यहाँ पर उपलब्ध कराई जा रही है, उसे निष्पक्ष तौर पर मूल्यांकित किया जाय। संपर्क भाषा भारती उनके द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम से जो सामाग्री ले रहा हूँ वह सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। अतः, यह किसी निजता का उल्लंघन नहीं है। इसी कारण से इस सामग्री को जस का तस यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

देवेंद्र तोमर जी ने अपने कार्यक्रम की घोषणा कई महीने पूर्व कर दी थी।

फिर उन्हों ने कार्यक्रमा की सहभागिता के लिए नामांकन निमंत्रित करते हुए पोस्ट डालनी शुरू की और सभी प्रतिभागियों से 5000 रुपये शुल्क के तौर पर मांगने का उपक्रम प्रारम्भ किया।

उनकी कई पोस्ट केवल इस बात को पुख्ता करने केलिए ही रहीं कि आखिर 5000 रुपए देकर कोई इस कार्यक्रम में क्यों उपस्थित हो?

हम उनकी लगभग हर पोस्ट पर निगाह रख रहे थे।

इस आयोजन की तिथि को उन्हों ने आगे भी बढ़ाया, संभवतः तब तक आर्थिक सहयोग वांछित स्तर पर नहीं पहुंच पाया होगा।

फिर, उनकी पोस्ट आनी प्रारम्भ हो गईं जिनमें 5000 रुपये की सहयोगकर्तियों की स्तुति रही।

हमारी यह कामना रही कि आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हो जाये क्योंकि कोई भी छोटे से छोटा आयोजन क्यों न हो, आयोजन आप में एक

अग्नि परीक्षा है।

श्री देवेंद्र तोमर का यह आयोजन सकुशल सम्पन्न हो गया।

निमंत्रित कवयित्रियों पर, आयोजन में व्यस्त होने की वजह से स्नेहिल कृपा न कर पाने के लिए सार्वजनिक क्षमा मांगते हुए एक सुंदर गीत उन्हों ने अगले दिन पोस्ट किया, आप देखें और कवि के ऐन्द्रीय सुख की कल्पना से आनंदित हों :

जैसा पहले करता आया
वह इस बार नहीं कर पाया
जैसा तुमने सोचा होगा
वैसा प्यार नहीं कर पाया।

ना हीं सुबह जगाकर तुमको
माथे पर चुंबन जड़ पाया
ना हीं तुम्हें बिठाकर सम्मुख
नयन तुम्हारे मैं पढ़ पाया
युगल लंच का आमंत्रण भी
मैं स्वीकार नहीं कर पाया।
जैसा तुमने सोचा होगा
वैसा प्यार नहीं कर पाया।

निकली भागम भाग दुपहरी
या फिर कोई मंच सम्हाले
बहुत हुआ मन पर बाहों के
गले तुम्हारे हार न डाले
जीभ चिढ़ाना नाक पकड़ना
कुछ व्यवहार नहीं कर पाया।
जैसा तुमने सोचा होगा
वैसा प्यार नहीं कर पाया।

सांझ सुहानी आयी भी तो
चिंता लेकर आयी कल की
बीत गए सो बीत गए थे
पर चिंता थी अगले पल की
इसी सोच में कजरा बिंदिया
से श्रृंगार नहीं कर पाया।
जैसा तुमने सोचा होगा
वैसा प्यार नहीं कर पाया।

रात जागते तो बीती पर
पास रहा भी लेकिन दूरी
कहाँ-कहाँ पर कितनी-कितनी
कैसी-कैसी थी मजबूरी
जिन अधरों पर रहा हमेशा
मैं अधिकार नहीं कर पाया।
जैसा तुमने सोचा होगा
वैसा प्यार नहीं कर पाया।
(डॉ देवेंद्र तोमर)

कवि ने बहुत सुंदर, द्रवित करने वाला गीत लिखा है। मगर यह गीत किसके लिए है? कार्यक्रम में उपस्थित लंगूरों के लिए नहीं, यह गीत तो उनकी प्रेयसी कवयित्री लाँगूरियों के लिए है।

"सुबह जगाकर तुमको माथे पर चुंबन जड़ पाया
बिठाकर सम्मुख नयन तुम्हारे मैं पढ़ पाया
बहुत हुआ मन पर बाहों के गले तुम्हारे हार न डाले
जीभ चिढ़ाना नाक पकड़ना कुछ व्यवहार नहीं कर पाया
कजरा बिंदिया से श्रृंगार नहीं कर पाया
रात जागते तो बीती पर पास रहा भी लेकिन दूरी
जिन अधरों पर रहा हमेशा मैं अधिकार नहीं कर पाया"

श्री देवेन्द्र जी के आयोजन की गर्मी आयोजन समाप्ति और द्रवित करने वाले गीत को पोस्ट करने के अगले दिन उतरी जैसा कि हर ऐन्द्रीय चरमोत्कर्ष की निष्पत्ति के बाद होता है।

उन्हों ने पोस्ट कर के उन 32 सहभागियों की भर्त्सना की जिन्हों ने मुफ्त में आतिथ्य स्वीकार किया। उन्हों ने बताया कि :

"इस सम्मेलन में बाहर से पधारे हुए अतिथि साहित्यकारियों की संख्या 50 के आसपास रही जबकि सहयोग राशि केवल 18 साहित्यकार मित्रों की ही प्राप्त हुई। जिन बत्तीस साहित्यकार मित्रों की सहयोग राशि प्राप्त नहीं हुई ये वही मित्र हैं जो ऊपर लिखित चार प्रकार की प्रतिक्रियाओं से किसी न किसी प्रकार की प्रतिक्रिया के उदाहरण प्रतिनिधि हैं। कुल मिलाकर आर्थिक सहयोग की दृष्टि से ₹90000 रुपए प्राप्त हुए जबकि आयोजन पर 2,14,300 व्यय हुआ है।"

अगर 38 लोग 5000 रुपये के हिसाब से और योगदान दे देते तो शायद **आयोजक को 1,90,000 की राशि और प्राप्त हो जाती और आयोजन लाभप्रद हो जाता।**

अपनी व्यथा को आगे बढ़ाते हुए देवेंद्र लिखते हैं :

"सारांश रूप में इन सब बातों के बाद और इन सब बातों के साथ हम चार लोग समस्या का समाधान खोज रहे हैं। मेरा ऐसा विश्वास है कि समाधान मिलेगा। अभी आदरणीय अग्रज असफल जी से बात हुई है उन्होंने चिंता मुक्त होने के लिए कहा है। मेरा विश्वास है की असफल जी रघुवंशी जी शैलेंद्र जी जैसे अग्रज मार्गदर्शकों से मैं या मेरे तीन साथियों में से कोई भी चर्चा करेगा तो उपयोगी सुझाव भी मिलेंगे और सकारात्मक सहयोग भी प्राप्त होगा।

इसी बीच डॉक्टर मधुबाला सिन्हा ने ₹10000 की राशि मेरी अकाउंट में डाल दी है। मुगलसराय से यमन शर्मा का फोन भी आया है वह भी सहयोग करने के लिए तत्पर है। माधुरी द्विवेदी और वंदना पांडे की इसी श्रेणी में शामिल है दोनों ने हर संभव मदद करने का भरोसा दिया है।

इधर सुधा शर्मा ने एक संदेश भेजा है जिसमें लिखा है किसी बात की चिंता मत करो, मैं हूँ ना!"

उनके द्वारा पारित किए गए इस निंदा प्रस्ताव का कुछ असर हुआ, भर्त्सना के पात्र कुछ लोगों की प्रतिक्रिया इस प्रकार आई :

•Satyendra Kumar Raghuvanshi

राधिका होटल में मैं 21 की रात्रि से 24 सितंबर की सुबह तक (दस बजे तक) रहा। कृपया उसका व्यय निस्संकोच मेरे व्हाट्सएप्प नंबर पर सूचित करें।

Asfal Ashok

Satyendra Kumar Raghuvanshi : आप हमारे खास मेहमान। आपसी आर्थिक सहयोग लेने का कोई औचित्य नहीं।

Satyendra Kumar Raghuvanshi

Gpay के माध्यम से मैंने अभी रु दस हज़ार का अल्प योगदान आभार सहित प्रेषित कर दिया है। कृपया इस तुच्छ सहयोग को स्वीकार करने का कष्ट करें देवेन्द्र जी। मुरैना का कार्यक्रम अविस्मरणीय था। यह सब मुख्यतः आपकी सक्रियता और रुचि के कारण सम्भव हुआ।

Madhubala Sinha

आपकी उपस्थिति और आपका ज्ञानवर्धन उद्बोधन ,हमारे लिए दोनो बहुत ही सार्थक रहा आदरणीय....उम्मीद करती हूं कि यह भविष्य में भी मिलता रहेगा

Manisha Khatate

बहुत ही सुंदर,अद्भुत तथा अकल्पनीय संयोजन - मार्गदर्शन रहां है मा.अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डा॰ देवेंद्र तोमर जी का ,उनकी अदम्य ईच्छा शक्ति निश्चित ही सराहनीय है और उनके परिवार का योगदान भी उल्लेखनीय है।आपके इस महतकार्य को

सलाम....

Sudha Sharma

यह कार्यक्रम हमारी संस्था का मतलब हमारा है

हम सब साथ है

हम सब सहयोग करेंगे

Madhubala Sinha

बहुत सुंदर....पर मुझे लगता है कि आपसे जुड़े सभी आपके अपने हैं और आपकी परेशानियों को समझते हैं। मैं समझती हूं कि आपके सभी अपने मिल कर इस समस्या का निदान कर लेंगे।आपने इतना बड़ा आयोजन किया,इतने लोगों को अंतर्राष्ट्रीय मंच दिया।देश के नामचीन रचनाकारों को एक मंच पर ला खड़ा किया।छोटे बड़े का भेद हटाकर सबको समान सम्मान दिया।आपके घर का कार्यक्रम तो था नहीं यह, हम सबका कार्यक्रम था। अतः आप निश्चिंत रहें,आपके साथ जुड़े लोग साहित्य को महत्व देते हैं,अर्थ को नहीं। धन कमाया जा सकता है,पर मुरैना में जो हमने कमाया है,वह शायद ही हम कमा पाते।हमें तो बहन अलका अग्रवाल से रश्क भी हो गया था कि इतने बड़े मंच पर,इतने नामचीन साहित्यकारों के बीच उनका जन्मदिन मनाना हमें तो नसीब न हुआ।पर यह आपकी देन है,विश्व साहित्य सेवा संस्थान की देन है।हम यह कैसे भूल जायेंगे।

आप निश्चिंत रहें सर...दो /चार दिन में सबका समाधान हो जाएगा।आपके इतने आपके साथ खड़े हैं।

Sudha Sharma

Madhubala Sinha बिलकुल सही

Author

डॉ देवेंद्र तोमर

Madhubala Sinha बेशक बिल्कुल सही कहा। उम्मीद के मुताबिक सबसे पहले तो आपका ही सहयोग प्राप्त हो गया है जिसका यहां आपने जिक्र भी नहीं किया यही है अपनों की पहचान।

Asfal Ashok

तन मन धन से साथ रहूंगा, बेफिक्र रहें। समस्या का निदान तो हम लोग करेंगे ही लेकिन उन साथी साहित्यकारों को भी चेताएंगे जो रचनात्मक सहयोग के अलावा कार्यक्रम में अन्य कोई सहयोग करने से बचते हैं।

यह बहुत अच्छा रहेगा की आप प्रत्येक साथी की सहयोग राशि और उस पर हुए खर्च की लिस्ट प्रस्तुत करें जिससे पारदर्शिता का अनुभव हो।

Madhubala Sinha

जी आदरणीय....आप जैसे साथियों के होते हुए सर को चिंतित होना ही नहीं चाहिए....और हम सभी भी साथ हैं

Asfal Ashok

Madhubala Sinha भरपूर सहयोग करने के लिए आपका शुक्रिया।

Madhubala Sinha

आप की उपस्थिति और ज्ञानवर्धक उद्बोधन से हम सभी धन्य हुए हैं आदरणीय।आगे भी यह संयोग मिलता रहे

DrKalpana Ram

बहुत सुंदर पोस्ट है देवेंद्र जी।कार्यक्रम हमारे संस्था का है।हमें तो कुछ करना ही है।मेरी दीदी Dr लक्ष्मीकला(पुण्य स्मृति में जिनका नाम है) की सुपुत्री विद्या ने भी सहयोग करने का वादा किया और कहा की अंकल को चिंता मत करने बोलो, हमलोग भी हैं।

श्री देवेंद्र तोमर अपनी इस लानत-मलानत को लगातार 80-90 लोगों को टैग कर रहे थे। परिणाम यह हुआ कि एक संभ्रांत महिला को यह सब नागवार गुजरा।

पता नहीं उन्हों ने मुरैना का आतिथ्य स्वीकार किया था अथवा नहीं पर यह तो निश्चित ही है कि यह तकादा उन्हें बुरा लगा और उन्हों ने लताड़ लगाते हुए लिखा :

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

Geeta Dubey

प्लीज टैग्ड बिल्कुल नहीं करें क्योंकि ना तो मैं किसी को टैग्ड करती हूँ और ना ही मुझे पसंद है।

Author डॉ देवेंद्र तोमर : Geeta Dubey जी! दरअसल मेरा ऐसा मानना है कि फेसबुक अथवा सोशल मीडिया की किसी भी प्लेटफार्म पर मेरे दोस्त साहित्यिक अथवा सामाजिक कार्यकर्ता हैं बस इसी भावना के साथ उन्हें अपनी प्रगति के समाचार देता रहता हूं।

लेकिन मैं आपकी परेशानी को भी भली-भांति समझ रहा हूं जब हमारी स्वयं की प्रसिद्ध इतनी होती है कि वही हमसे हमारी टाइमलाइन पर सम्हाले नहीं सम्हलती तब हमें दूसरे के टेग करने पर झुंझलाहट आना स्वाभाविक है। आपकी परेशानी जानने और आपकी कमेंट पढ़ने के बादमैंने आपकी प्रोफाइल का भली-भांति अवलोकन किया सचमुच आप शोहरत प्राप्त शख्सियत हैं और मैंने आपको टेक करके वाकई आपके साथ अन्याय किया जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

मैंने आपकी परेशानी को कम करने के लिए अपनी फ्रेंड सूची से आपको अनफ्रेंड कर दिया है।वैसे मैं तकनीकी दृष्टि से काफी कमजोर हूं लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा करने से मैं आपको अपनी कोई भी पोस्ट टेग करने के अधिकार से वंचित हो जाऊंगा।

इस धृष्टता के लिए मुझे क्षमा किया जाए।

Geeta Dubey : आपको टैग करना ही नहीं चाहिए जिसको कमेंट करना है वो स्वयं करेंगे आप स्वयं किसी की पोस्ट पर लाइक या कमेंट नहीं करते तब तो हम आपको टैग्ड नहीं करते यदि आपकी प्रसिद्ध इतनी ज्यादा है कि आपसे नहीं संभल रही है तो दूसरे को संभालने के लिए क्यों मजबूर करते हैं आप ही नहीं हर व्यक्ति कहीं ना कहीं किसी ना किसी क्षेत्र में प्रसिद्ध प्राप्त करता है तो इसका मतलब तो ए नहीं कि वो दूसरे के सर पर बोझ लाद दे मैं पहले भी टैग्ड करने के लिए सभी को मना कर चुकी हूँ अच्छा किया आपने अनफ्रैंड कर दिया जो काम हमें करना चाहिए वो आपने स्वयं कर दिया। सच हमेशा कड़वा लगता है।

Author डॉ देवेंद्र तोमर : Geeta Dubey नाराज मत होइएगा मैंने तो आपकी परेशानी कम करने के लिए अनफ्रेंड किया है इसका मतलब यह नहीं है कि मैं आपकी पोस्ट देखना बंद कर दूंगा।

Geeta Dubey : आप हमारी पोस्ट नहीं देखेंगे तो भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है अनफ्रैंड करके आपने महानता का परिचय दिया है ए दुनियां है यहां एक आता है एक जाता है।

Author डॉ देवेंद्र तोमर : Geeta Dubey जी सच कहा आपने।

Author डॉ देवेंद्र तोमर : Geeta Dubey मैं कहीं नहीं गया। मैं यही हूं। आपकी आयु और अनुभव के आधार पर आप मेरे लिए हमेशा आदरणीय थी, आदरणीय है और आदरणीय रहेंगी। शांत हो जाइए। चाय पी लीजिए और थोड़ी देर विश्राम कीजिए उसके बाद समय मिले तो जरा मेरी टाइमलाइन देख लीजिए।मैं इतना बुरा इंसान नहीं हूं जितना आप मुझे समझ रहीं हैं। मैंने सिर्फ और सिर्फ आपकी परेशानी कम करने के लिए ऐसा किया है। मैं आपको निवेदन कर चुका हूं कि मेरा स्वभाव है कि मैं एक लाइन से टेग करता जाता हूं और

सिर्फ यही सोचकर कि यह सभी मेरे साहित्यिक मित्र हैं लेकिन कभी-कभी गलती से गलत निर्णय हो जाता है।

आप जिस परेशानी से गुजरती हो इस परेशानी से मैं भी फेसबुक पर आने के पहले दिन से ही गुजर रहा हूं लेकिन मैं कभी किसी को मना नहीं करता। चुपचाप उसे रिमूव कर देता हूं। आप भी ऐसा ही किया करो। ऐसी कोई पोस्ट आया करें तो बजाय इतना लिखने में अपना समय खराब करें उसे एक सेकंड में रिमूव कर दिया करें। वैसे फेसबुक पर ऐसा प्रावधान भी है कि यदि आप चाहोगी तो ही आपके टाइमलाइन पर कोई टैग कर पाएगा अन्यथा नहीं। अब ऐसा मत कहिए कि मैं आपको उपदेश दे रहा हूं मैं तो सिर्फ अपनी छोटी-मोटी जानकारी के आधार पर आपको बता रहा हूं। मुझे भी हालांकि तकनीकी दृष्टि से कुछ आता जाता नहीं है। हमेशा हस्ती मुस्कुराती रहिए। यह आभासी दुनिया है। आपने बिल्कुल सच लिखा एक आता है एक जाता है, मुझे भी ऐसा ही लगता है, इस आभासी दुनिया में बातें करते हुए कब जिंदगी की शाम हो जाएगी हमको पता भी नहीं चलेगा और यही लोग जो हमसे बातें कर रहे हैं यह पता भी नहीं करेंगे कि हम कहां गए।

Geeta Dubey : मैं कितने लोगों को रिमूव करूंगी इसलिए मना कर देती हूँ ताकि बार बार के झंझट से दूर हो जाऊं देखिए मेरी आदत है स्पष्ट बोलने कि चाहे अच्छा लगे या बुरा।

इस तथाकथित 'साहित्यिक' आयोजन की चख-चख को यहीं छोड़ते हैं। इसका उल्लेख मात्र इस उद्देश्य से किया गया है कि यह बात आपके संज्ञान में रहे कि एक आयोजनकर्ता को किन किन दुश्वारियों और जोखिम से हो कर गुजरना पड़ता है।

बहुत सारी कथाएँ हैं फिर कभी और विस्तार से चर्चा होगी उनपर।

साहित्यमंडल श्रीनाथद्वारा : 1937 से हिन्दी के लिए चल रहा एक अनवरत आंदोलन

अब लौटते हैं साहित्यमंडल श्रीनाथद्वारा आयोजित इस वर्ष के कार्यक्रम की ओर, जब सुश्री आशा पाण्डेय ओझा जो कि मेरे छोटी बहिन सरीखी हैं के कहने पर श्री श्याम प्रकाश देवपुरा जी को आत्म-परिचय भेजा तो कुछ दिन बाद ही उनका फोन आगया, उन्हों ने सूचित किया कि "हिन्दी लाओ-देश बचाओ समारोह" 14-15 सितंबर को आयोजित होगा, आप कृपया इसी के अनुरूप दिल्ली से मावली जंक्शन की टिकट की व्यवस्था कर के मुझे सूचित भी कर दें। मैंने वैसा ही किया और दिनांक 12 सितंबर 23 को दिल्ली (हज़रत निज़ामुद्दीन) से चलकर 13 सितंबर को मेवाड़ एक्स्प्रेस से वहाँ पहुँचने की जानकारी उन्हें प्रदान कर दी।

इस बात की जानकारी जब मैंने आशा शैली जो कि लाल कुआं, से हिन्दी की प्रख्यात साहित्यकारा हैं उन्हें दी तो उनकी यह हिदायत रही कि इस आयोजन में मैं अवश्य हिस्सा लूँ।

उनका कहना था कि वे श्रीनाथद्वारा में साहित्यमंडल द्वारा आयोजित कई कार्यक्रमों के हिस्सा रह चुकी हैं, अतः वहाँ के आतिथ्य, आवभगत, आयोजन और तमाम सात्विक रसानुभूति के लिए वहाँ आपका जाना आवश्यक भी है।

उन्हों ने साहित्यमंडल द्वारा श्री भगवती प्रसाद देवपुरा जी द्वारा किए गए कार्यों की भी भूरि भूरि प्रशंसा की।

मुझे गर्मी का प्रकोप भयानक त्रासद लगता है। इस बात को मैंने श्री श्याम प्रकाश देवपुरा जी को बताया तो उन्हों ने कहा 'यहाँ मौसम बहुत बढ़िया है, पंखा भी सिम पर कर के चलाना पड़ता है। होटल आपको बढ़िया मिलेगा।' मैं आश्वस्त हो गया।

औत्सुक्य क भाव और 13 सितंबर 2023 को मावली जंक्शन पर पहुंचना :

12 सितंबर को मेवाड़ एक्स्प्रेस शाम 18.25 पर हज़रत निज़ामुद्दीन से प्लेटफॉर्म-5 से

रवाना हुई। प्लेटफॉर्म पर पहुंचे ही थे कि पीलीभीत से चलकर आ रहे मूर्धन्य साहित्यकार श्री सत्यपाल सिंह 'सजग' जी का फोन आ गया, वे भी इसी ट्रेन से चल रहे थे।

श्री सजग जी से इस वर्ष जून में लाल कुआं, हल्द्वानी में परिचय हुआ था। आप बहुत अच्छी कविता लिखते हैं। उनके साथ श्री राम रत्न यादव 'रतन' जी भी थे। वे भी बहु-श्रुत कवि हैं।

13 सितंबर को मेवाड़ एक्स्प्रेस लगभग सही समय पर मावली जंक्शन पर पहुँच गई। मौसम बहुत खुशनुमा था। बादल छाए हुए थे। हल्की -हल्की बूँदा-बाँदी जारी थी। वातावरण में सम्मिलित वनस्पतियों के गंध का भाव तैर रहा था।

कोच से उतरते ही, स्टेशन पर लेने आए हुए महानुभाव का फोन आगया। ट्रेन से इस आयोजन में पहुँचने वाले बहुत से यात्री उतरे।

शीघ्र ही हम उस मिनी बस में बैठ गए जिसे श्री देवपुरा जी ने भेजा था।

मेवाड़ एक्स्प्रेस के आधे घंटे बाद 'चेतक एक्स्प्रेस' के आने का समय था जिससे कुछ और यात्री आ रहे थे। श्री रमनिवास 'मानव' जी के सपत्नीक पधारते ही बस मावली जंक्शन से श्रीनाथद्वारा के लिए चल पड़ी। मावली जंक्शन से श्रीनाथद्वारा की दूरी लगभग 26.6 किलोमीटर की है। अरावली पर्वत शृंखला की असमतल पहाड़ी उपत्यकाओं की सर्पीली सड़कों से गुजरते हुए यह यात्रा लगभग 45 मिनट में पूरी हुई।

श्रीनाथद्वारा प्राचीन शहर है, असमतल पहाड़ी क्षेत्र में बसा हुआ है। यहाँ की ऊंचाई-नीचाई समतल प्रदेश के निवासियों के लिए कष्टप्रद प्रतीत हो सकती है।

चूंकि, मिनी बस इस रास्ते को पार कर के सीधे होटल पर आ कर रुकी थी अतः हमें दिक्कत नहीं हुई।

श्रीनाथद्वारा में सड़कें इस प्रकार की हैं कि एक साथ दो स्वचालित वाहन इन सड़कों पर नहीं चल सकते। कुम्हार पाड़ा, जहां होटल गोपी

वल्लभ अवस्थित है शायद 20 फुट चौड़ी सड़क से जुड़ा हुआ है।

शहर क्योंकि पहाड़ी घाटी पर बसा है और घाटियां असमतल होती हैं अतः शहर में हाथ-रिक्शा नहीं चलते। मिनी बसों, कारों के साथ-साथ तिपहिया स्कूटर इस शहर के अंदर के सार्वजनिक वाहन हैं।

एक बात यहाँ ध्यान देने योग्य है वह यह कि यहाँ सभी घरों में विद्युतीकरण भूमिगत है यानि कि बिजली के खंभे और उनके साथ झूलती इंटरनेट/वाईफ़ाई की तारें देखने को नहीं मिलीं। विद्युतीकरण के लिहाज से श्रीनाथद्वारा जी में वह कार्य पहले ही सम्पन्न हो चुका है जो काम, अभी भी वाराणसी में चालू है (शायद शर बड़ा होने की वजह से) और जो काम अभी राजधानी दिल्ली में शुरू ही नहीं हो सका है।

उत्तम आवास व्यवस्था :

सभी प्रतिभागियों के ठहरने के लिए श्री श्याम प्रकाश देवपुरा जी ने उत्तम प्रबंध किया हुआ था।

होटल गोपी वल्लभ में रिसेप्शन पर ही एक कृशकाय सज्जन (श्री श्याम प्रकाश देवपुरा) सभी अतिथियों को अति-विनम्र भाव से कमरे की चाभी प्रदान कर रहे थे।

मुझे चाभी देते समय उन्होने मेरे परिचय में कुछ बोला और रूम नंबर 201 की चाभी मुझे पकड़ा दी।

होटल का कमरा 10X12 के आकार का साफ कमरा था जिसके साथ टॉइलेट सम्बद्ध था। नलकों में ठंडा और गरम पानी मौजूद था। चूंकि मौसम अनुकूल और मेघाच्छादित था अतः गरमी का एहसास न हुआ।

कमरे पहुँचने के थोड़ी देर बाद ही दरवाजे पर दस्तक हुई, चाय सब को कमरे में ही सर्व की जा रही थी।

तकाल ही सभी मेहमानों को बता दिया गया कि 'साहित्यमंडल विद्यालय' परिसर में नाश्ते की व्यवस्था है, सब वहीं चलें। यह स्थान होटल से संभवतः 600-700 कदम की दूरी पर था।

सर्वोत्तम भोजन व्यवस्था :

जब समूह वहाँ पहुंचा तो देखा करीने से विद्यालय के छात्रों की मेजें और बेंच तीन-चार कतार में करेने से लगे हुए थे।

यहीं पर सभी को यथेच्छा नाश्ता स्टील की प्लेटों और कटोरियों में परोसा गया।

नाश्ते में पूड़ियाँ, सब्जी, कचौड़ी, समोसे, गुलाबजामुन, खम्मन ढोकला, जलेबी सभी कुछ था। अब चूंकि खाने का जिक्र कर ही रहा हूँ तो एक बार में ही लिख दे रहा हूँ कि प्रति दिन तीन बार इसी प्रकार के भोजन की व्यवस्था साहित्यमंडल समस्त सहभागियों के लिए करता रहा, केवल इसको नाश्ता, दोपहर भोज या रात्रि भोज हम लोगों द्वारा कहा जाता रहा।

यह भोज, अङ्ग्रेज़ी बुफ़े नहीं था। यह पारंपरिक भारतीय भोज व्यवस्था थी जिसमें मेहमानों को सानुरोध और साग्रह भरपूर भोजन कराया जाता था।

स्वयं श्री श्यामप्रकाश देवपुरा कभी सब्जी की बाल्टी लिए तो कभी रायता लिए मेज-मेज घूम रहे थे।

नाश्ते के बाद, श्याम प्रकाश देवपुरा जी ने टैक्सी की व्यवस्था करा दी जिसने 1800 रुपये में रक्त तलैया, हल्दी घाटी, चेतक स्मारक, उदयपुर, एकलिंगेश्वर जी के दर्शन करा दिए।

चूंकि, हमने इनोवा टैक्सी लगभग अपराहन एक बजे की थी अतः हल्दी घाटी

14 सितंबर को प्रभात फेरि के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ।

साहित्यकारों का विधिवत सम्मान कार्यक्रम दोपहर भोजन के बाद लगभग एक बजे से शुरू हुआ तो प्राप्त जानकारी के अनुसार रात डेढ़ बजे तक चलता रहा।

मैं, रात साढ़े आठ बजे ही अपने कमरे में लौट आया था।

दिनांक 15 सितंबर को भी सम्मान कार्यक्रम दोपहर तीन बजे तक चला।

सहभागियों ने जल्दी-जल्दी भोजन लिया और वापसी के लिए अपने होटल चले गए। कुछ की लगभग शाम छह बजे उदयपुर से फ्लाइट थी तो कुछ को शाम 5.45 पर मावली जंक्शन से चेतक एक्स्प्रेस पकड़नी थी।

हमारी वापसी शाम सवा सात बजे मेवाड़ एक्स्प्रेस से मावली जंक्शन से थी, श्री श्याम प्रकाश देवपुरा जी ने वहाँ तक केलिए एक मिनी बस कर दी थी किन्तु, उस बस में आवश्यकता से अधिक यात्री लद गए जिसकी वजह से तत्काल दूसरी बस की भी व्यवस्था श्री देवपुरा जी ने कर दी।

दोनों मिनी बसें साढ़े छह बजे शाम गंतव्य पर पहुँच गईं।

वापसी में भी मेवाड़ एक्स्प्रेस जो कि उयदयपुर से चलती है, अपने समय पर थी अतः लगभग सवा सात बजे प्लेटफॉर्म नंबर 2 पर लग गई।

श्री श्यामप्रकाश देवपुरा, श्री रामनिवास मानव, श्री अमर सिंह वधान से परिचयलाभ, अमूल्य थाती है।

श्री श्यामप्रकाश देवपुरा जी व्यक्ति नहीं, एक संस्था हैं जिनका जीवन हिन्दी सेवियों की सेवा में ही लीन है.....

इस यात्रा और आयोजन के दौरान प्रदत्त सम्मान के लिए छोटी बहन सुश्री आशा पाण्डेय ओझा का विशेष आभार.....

और हाँ! यदि किसी साहित्यिक आयोजन पर आप निमंत्रित हैं तो सब बातें पहले से ही तय कर लीजिएगा.....

"साहित्य मंडल" की पृष्ठभूमि हैं श्याम प्रकाश देवपुरा

हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के उन्नयन और चेतना जागृति में देश की अनेक साहित्यिक संस्थाओं के बीच राजस्थान के धार्मिक नगर श्रीनाथद्वारा में हिंदी सेवा में रत "साहित्य मंडल" संस्था ने अपनी गतिविधियों से कीर्तिमान का इतिहास बना कर अपनी अलग पहचान बनाई है। संस्था द्वारा हिंदी के विकास के लिए अनेक प्रकल्प संचालित किए जाते हैं।

प्रतिवर्ष हिंदी दिवस 14 सितम्बर को आयोजित "अंग्रेजी हटाओ' आंदोलन से हिन्दी जगत को जगाने हेतु "उठो, जागो और अपने आपको पहचान" के मूल मंत्र का शंखनाद किया जाता है। संस्था द्वारा अष्टछापीय कवियों की संपूर्ण वाणी तथा समीक्षाएँ पुस्तकों के रूप में छापकर इस संस्था ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। संस्था अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'हरसिंगार' के माध्यम से हिन्दी की अभूतपूर्व सेवा कर रही है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक संस्था ने अपनी 1937 ई. में स्थापना से लेकर हिन्दी के उन्नयन तथा हिन्दी सेवियों को जोड़ने का जिस प्रकार से प्रयास किया है वह स्तुत्य है।

अष्टछाप, महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी एवं उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी द्वारा संस्थापित 8 भक्तिकालीन कवियों का एक समूह था। जो अपने विभिन्न पद एवं कीर्तनों के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का गुणगान किया करते थे। अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में हुई थी। स्थापना के बाद भगवान कृष्ण की लीलाओं के गुणगान का क्रम निरंतर चलता रहा। इस संस्था द्वारा इन कवियों की वाणी को लिपिबद्ध कर प्रकाशन कराया गया। आज यह दुर्लभ साहित्य खास कर शोधार्थियों के लिए विशिष्ट महत्व का है। खास बात यह भी है कि इस अति प्राचीन और दुर्लभ साहित्य के लिए पृथक से अष्टछाप कक्ष की स्थापना की गई है। हिंदी भाषा के विकास और हिंदी सेवियों के लिए एक बड़ा पुस्तकालय का संचालन भी किया जाता है जिसमें लगभग 50 हज़ार हस्तलिखित ग्रथों एवं साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं से विनिर्मित जिल्दों का अपूर्व संग्रह है किया गया है अर्थात यह

एक उपयोगी संदर्भ पुस्तकालय भी है। संस्था का अपना एक वाचनालय भी संचालित है जिसमें देश भर से करीब 200 प्रकार के पत्र-पत्रिकाएं पाठकों के लिए मंगवाई जाती हैं। एक छोटा बाल पुस्तकालय प्रथक से चौपाटी पर संस्था द्वारा संचालित किया जाता है। यही नहीं संस्था का पत्रिका कक्ष, साहित्यकार कक्ष, पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष जहां ज्ञान की ज्योति बिखेरता हैं वह दर्शनीय भी है। संस्था द्वारा प्रति वर्ष रंगमंचीय कार्यक्रम, ब्रजभाषा समारोह, साहित्य संगोष्ठी, आदि के कार्यक्रम भी आयोजित कराए जाते हैं।

शिक्षा का आलोक फैलाने के लिए संस्था उत्तम व्यवस्थाओं के साथ एक विद्यालय का संचालन भी करती है जिसका परिसर सुरम्य बगीचे एवं खेल मैदानों से युक्त है।
संस्था के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री श्याम प्रकाश देवपुरा कुशल नेतृत्व के साथ संस्था को बुलंदियों तक पहुंचाने में सक्रिय हो कर सबको साथ लेकर न केवल अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं वरन संस्था का महत्व देशव्यापी बना दिया है।

उल्लेखनीय है कि 6 जनवरी 2014 में साहित्य मण्डल के संस्थापक प्रधानमंत्री एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व.भगवती प्रसाद देवपुरा के देवलोकगमन के पश्चात इन्होंने संस्था का कार्यभार संभाला। इन्होंने 6 जनवरी को कार्यक्रम में वृद्धि कर पिता की पुण्य तिथि पर एक नया कार्यक्रम जोड़ा जिसमें प्रतिवर्ष साहित्यकारों को आमंत्रित कर त्रिदिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जाता है। ये अपने पिता के समय से ही उनके साथ निरंतर संस्था की गतिविधियों से जुड़े रहे हैं।

देवपुरा ने पिता के समय से चली आ रही परम्पराओं त्रिदिवसीय ब्रजभाषा पाटोत्सव समारोह व 14-15-16 सितम्बर को हिन्दी दिवस के त्रिदिवसीय समारोह को निरंतरता प्रदान कर संस्था की गरिमा को बनाए रखा है। कई दिनों पूर्व देश के इन गरिमामय कार्यक्रमों की रूपरेखा बननी शुरू हो जाती है और समारोह के आयोजन बहुत ही गरिमा के साथ सुव्यवस्थित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

संस्था द्वारा 14 जनवरी को राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार – प्रसार के लिए श्लाघनीय उपलब्धियों के लिए साहित्यकारों, हिन्दी सेवियों एवं संपादकों को सम्मान किया जाता है। संस्था का यह कार्यक्रम आज देशव्यापी कार्यक्रम बन गया है। इस अवसर कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के प्रधानमंत्री श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा के नेतृत्व में संस्था द्वारा आयोजित विशाल रैली से होता है जो आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहती है।

इसमें विद्यालय के बच्चे, शिक्षक, शिक्षिकाओं, संस्था के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त सारे देश से पधारे हुए अतिथिगण एवं श्रीनाथद्वारा के गण्यमान्य नागरिक सम्मिलित रहते हैं। यह विशाल रैली विद्यालय के बाल-बैंड की अगुआई में श्रीनाथद्वारा का भ्रमण कर राष्ट्रभाषा अपनाने एवं अंग्रेजी से मुक्ति का संदेश देती है।

श्याम प्रकाश देवपुरा की साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए सरकार ने आपको ब्रजभाषा अकादमी का सदस्य नियुक्त किया है, जो साहित्य जगत के लिए गर्व की बात है। संस्था ने अष्टछाप कवियों विशाल ग्रन्थों का प्रकाशन कर श्रीकृष्ण एवं ब्रजभाषा की बहुत बड़ी सेवा की। उल्लेखनीय है कि एक अन्य महत्वपूर्ण गतिविधि के अंतर्गत साहित्य मण्डल" दशकों से ब्रजभाषा के उन्नयन के लिए प्रतिवर्ष श्रीनाथजी के पाटोत्सव पर ब्रजभाषा साहित्यकारों को आमंत्रित कर उनका सम्मान समारोह, ब्रजभाषा में कवि सम्मेलन सहित श्रीनाथजी और भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े प्रसंगों पर उपनिषद, आलेख वाचन का आयोजन भी करती है।

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल

तेरा दिल खोल के हँसना
मेरा बंधन खोल रहा है
सोना तेरी इन आंखों में
मेरा जीवन बोल रहा है।

बोले कोयल मंजर की बोली
बोले सूरज समझ ले तारे
गाते गीत मधुर प्रीत के
झरने नदियां चरण पखारे
मैं भी मोहित कमल नयन के
चांद सा मुखड़ा हर पल निहारे
सोना तेरी इन अधरों में
मेरा जीवन घोल रहा है।

सोना तेरी इन आंखों में
मेरा जीवन बोल रहा है।

दीपक जलते, जलते है पतंगा
मन चकोरे आसमां निहारे
उठती है जब पीर की बदली
मन का पंछी उड़-उड़ कर हारे
जीवन के इन तुफानों में
मेरा मन बस तुम्हें पुकारे
सोना तेरे केश जाल में
मेरा जीवन डोल रहा है।
सोना तेरी इन आंखों में
मेरा जीवन बोल रहा है।

डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद

आज भी प्रासंगिक हैं महात्मा गाँधी के विचार

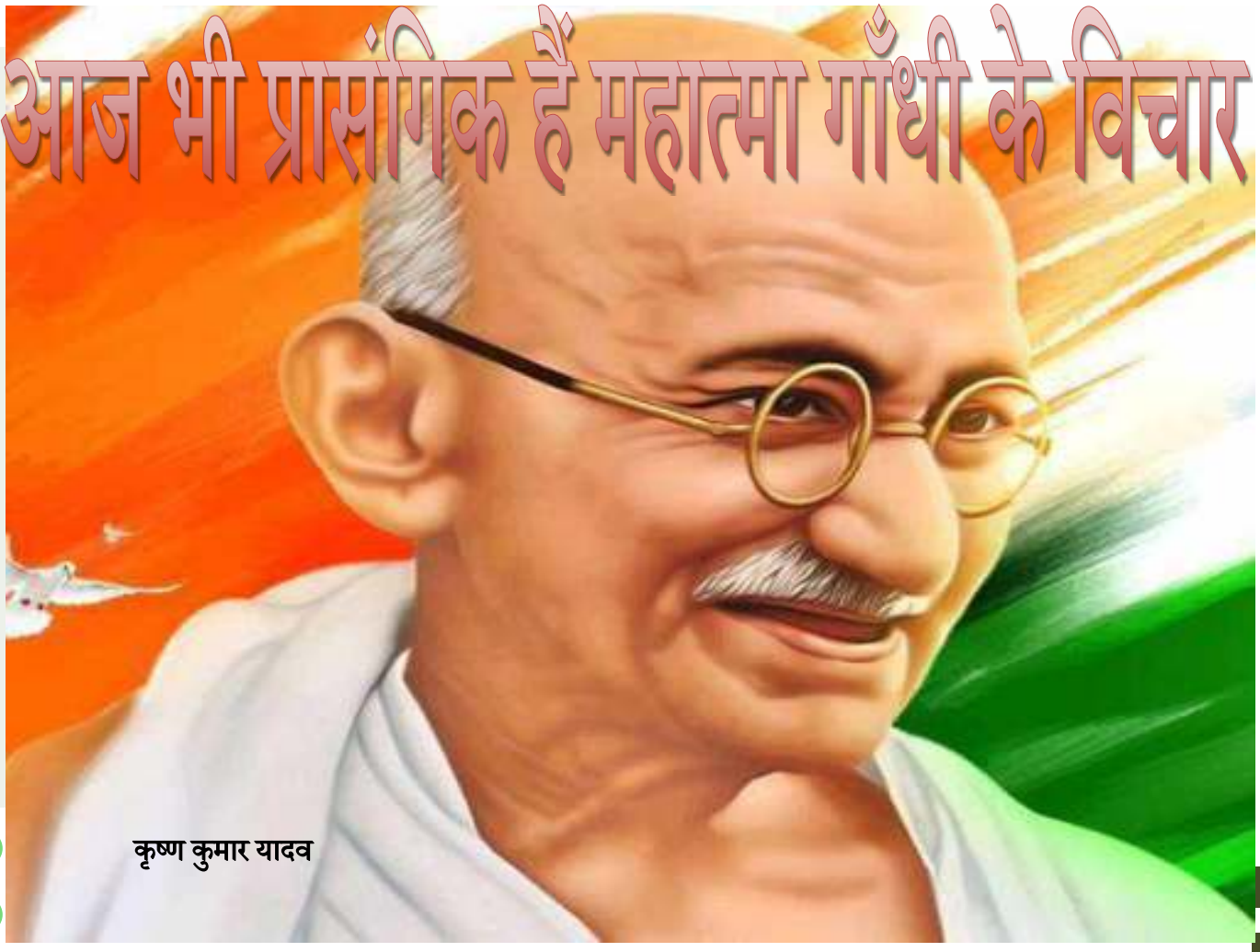

कृष्ण कुमार यादव

विश्व पटल पर महात्मा गाँधी सिर्फ एक नाम नहीं अपितु शान्ति और अहिंसा का प्रतीक है। महात्मा गाँधी के पूर्व भी शान्ति और अहिंसा की अवधारणा फलित थी, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह एवं शान्ति व अहिंसा के रास्तों पर चलते हुये अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया, उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता। तभी तो प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि -''हजार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई इन्सान धरती पर कभी आया था।'' संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 से गाँधी जयन्ती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाये जाने की घोषणा की तो अमेरिकी कांग्रेस में बापू को दुनिया भर में स्वतंत्रता और न्याय का प्रतीक बताते हुए प्रतिनिधि सभा में उनकी जयंती मनाने संबंधी प्रस्ताव पेश किया गया। दुनिया के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका के मुखिया रहे ओबामा से लेकर तमाम राष्ट्राध्यक्ष गाँधी जी के कायल रहे हैं। उनकी मानें तो अगर भारत में अहिंसात्मक आंदोलन नहीं होता तो अमेरिका में नागरिक अधिकारों के लिए वैसा ही अहिंसात्मक आंदोलन देखने को नहीं मिलता। निश्चिततः दुनिया का यह दृष्टिकोण आज के दौर में शान्ति व अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबन्दर में जन्मे मोहनदास करमचंद गाँधी ने 1891 में इंग्लैण्ड से बैरिस्टरी पास की और पहले राजकोट व फिर बम्बई में वकालत करने लगे। 1893 में अब्दुल्ला सेठ नामक एक व्यापारी के मुकदमे में वे दक्षिण अफ्रीका गये और वहाँ पहली बार उन्हें अंग्रेजों की भारतीयों व अफ्रीकियों के प्रति रंगभेद नीति का कटु अनुभव हुआ। एक तरफ उन्हें प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद रेलवे के डिब्बे से बाहर निकाल दिया गया तो दूसरी तरफ भारतीय होने के कारण तीन पौण्ड की लाइसेंस फीस देने को

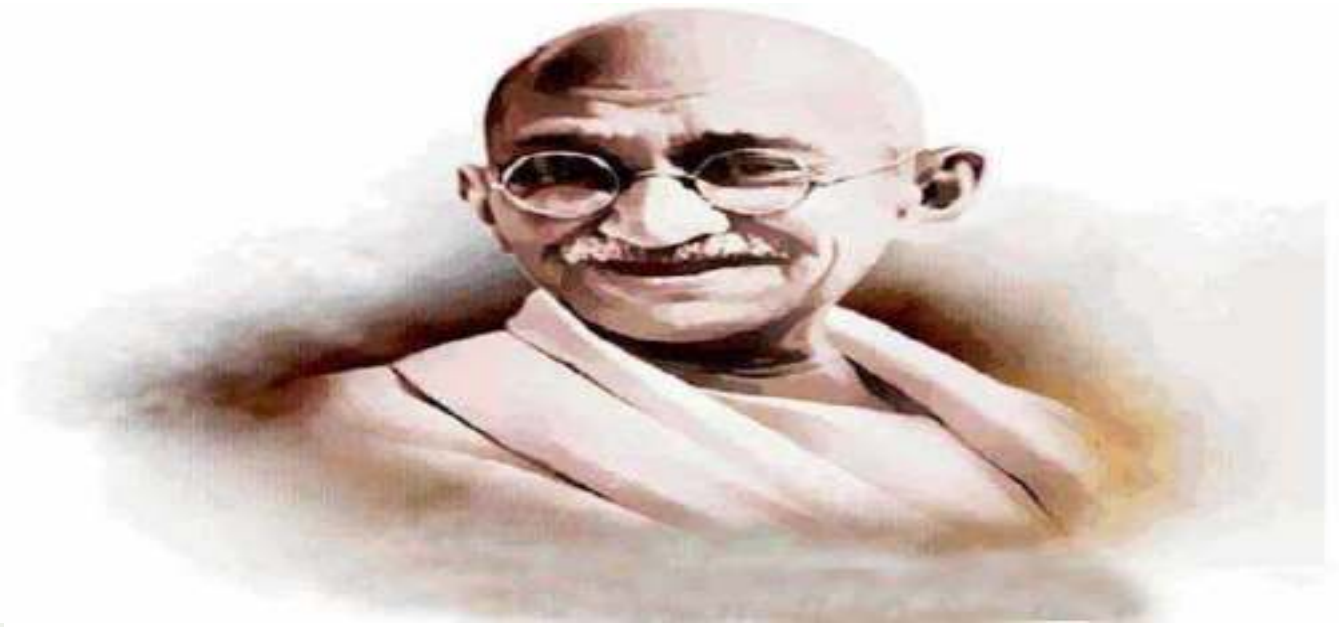

कहा गया। यही नहीं उनकी वेश-भूषा का भी मजाक उड़ाया गया। ऐसे में गाँधी जी ने इस रंगभेद नीति का विरोध किया और 1903 में 'इण्डियन ओपिनियन' अखबार की शुरुआत की। 11 सितम्बर 1906 को युवा बैरिस्टर गाँधी जी ने भारतीय मूल के लगभग 3000 लोगों को दक्षिण अफ्रीका में जोहान्सबर्ग के एंपायर थियेटर में इकट्ठा किया और एशियाटिक अध्यादेश के खिलाफ, जिसके तहत एशियाई लोगों को अपनी अंगुलियों के निशान रजिस्टर कराने व अपने साथ सदैव पहचान पत्र रखना अनिवार्य बना दिया गया था, के विरूद्ध यह प्रस्ताव पास किया कि- ''वे अपना दमन करने वाले श्वेत औपनिवेशक अत्याचारों का प्रतिरोध उन पर हाथ उठाए बिना करेंगे और उनके किसी भी जुल्म के सामने सिर नहीं झुकाएंगे।'' यहीं पर गाँधी जी ने लोगों को सम्बोधित करते हुये प्रथम बार 'सत्याग्रह' विचारधारा का सूत्रपात किया। विरोध के इस नए हथियार को दक्षिण अफ्रीका की अंग्रेज सरकार सहन न कर सकी और गाँधी जी सहित 27 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया और उन्हें देश छोड़ने का आदेश दिया। परन्तु गाँधी जी ने उस आदेश का भी उल्लंघन किया और उन्हें जेल भेज दिया गया। इस प्रतिरोध के चलते दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने अन्ततः झुकते हुये 1914 में भारतीयों के विरुद्ध अधिकतर विभेदकारी कानून खत्म कर दिया। यह गाँधी जी की एक बड़ी जीत थी और इसी के साथ 18 जुलाई 1914 को इंग्लैण्ड होते हुये वे भारत रवाना हो गये तथा 1915 में भारत पहुँचे। इस बीच 4 अगस्त 1914 को प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो चुका था और गाँधी जी ब्रिटिश सरकार के बिना शर्त के सहयोगी रूप में सामने आये। वस्तुतः उन्हें लगा कि अंग्रेज इस विश्व युद्ध में उच्च सिद्धान्तों की रक्षार्थ लड़ रहे हैं और युद्ध पश्चात भारत की स्वाधीनता की दिशा में काम करेंगे। अंग्रेजी हुकूमत ने इसके बदले में गाँधी जी को 'केसर-ए-हिन्द' उपाधि से नवाजा। परन्तु गाँधी जी की सोच अन्ततः स्वप्नभंग ही साबित हुई और असहयोग आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी नीतियों के विरोध में उन्होंने यह उपाधि लौटा दी।

जब गाँधी जी भारत लौटे तो वे इंग्लैड से बैरिस्टरी पास कर लौटे ऐसे ऐसे धनी व्यक्ति थे, जिसकी सालाना आय करीब 5,000 पाउण्ड थी। भारत की धरती पर प्रवेश करते ही उन्हें लगा कि अंग्रेजों के दमन का शिकार भारतीयों को काला कोट पहने फर्राटे से कोर्ट में अंग्रेजी बोलने वाले मोहनदास करमचंद गाँधी की नहीं वरन् एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो उन्हीं के पहनावे में, उन्हीं की बोली में, उन्हीं के बीच रहकर, उनके लिए संघर्ष कर सके। ऐसे में गाँधी जी ने अपनी पहली उपस्थिति अप्रैल 1917 में चम्पारन, बिहार में नील के खेतों में काम करने वाले किसानों हेतु सत्याग्रह करके दर्ज करायी पर अखिल भारतीय स्तर पर उनका उद्भव 1919 के खिलाफत आन्दोलन व फिर असहयोग आन्दोलन से हुआ। 1919 से आरम्भ इस दौर को भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में 'गाँधी युग' के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी ने न केवल उस समय चल रही उदार व उग्र विचारधाराओं के उत्तम भागों का समन्वय किया बल्कि दोनों को एक अधिक गतिशील और व्यावहारिक मोड़ दिया। 5 फरवरी 1922 को चौरीचौरा काण्ड के बाद बीच में ही असहयोग आन्दोलन वापस लेकर गाँधी जी ने यह जता दिया कि वे हिंसा की बजाय अहिंसक तरीकों से भारत की आजादी चाहते हैं। असहयोग आन्दोलन से जहाँ जनमानस में अंग्रेजी हुकूमत का खौफ खत्म हो गया वहीं जनसमूह गाँधी जी के पीछे उमड़ पड़ा। इसके बाद तो सिलसिला चल निकल पड़ा, आगे-आगे गाँधी जी और उनके पीछे पूरा कारवां। जाति-धर्म-भाषा-क्षेत्र से परे इस कारवां में पुरुष व महिलायें एक स्वर से जुड़ते गये। 1920-22 के असहयोग आन्दोलन, 1930-34 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन, 1940-41 के व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन द्वारा गाँधी जी ने अंग्रेजी हुकूमत को जता दिया कि भारत की स्वतंत्रता न्यायपूर्ण है और भारत में अंग्रेजी राज्य की समाप्ति आवश्यक

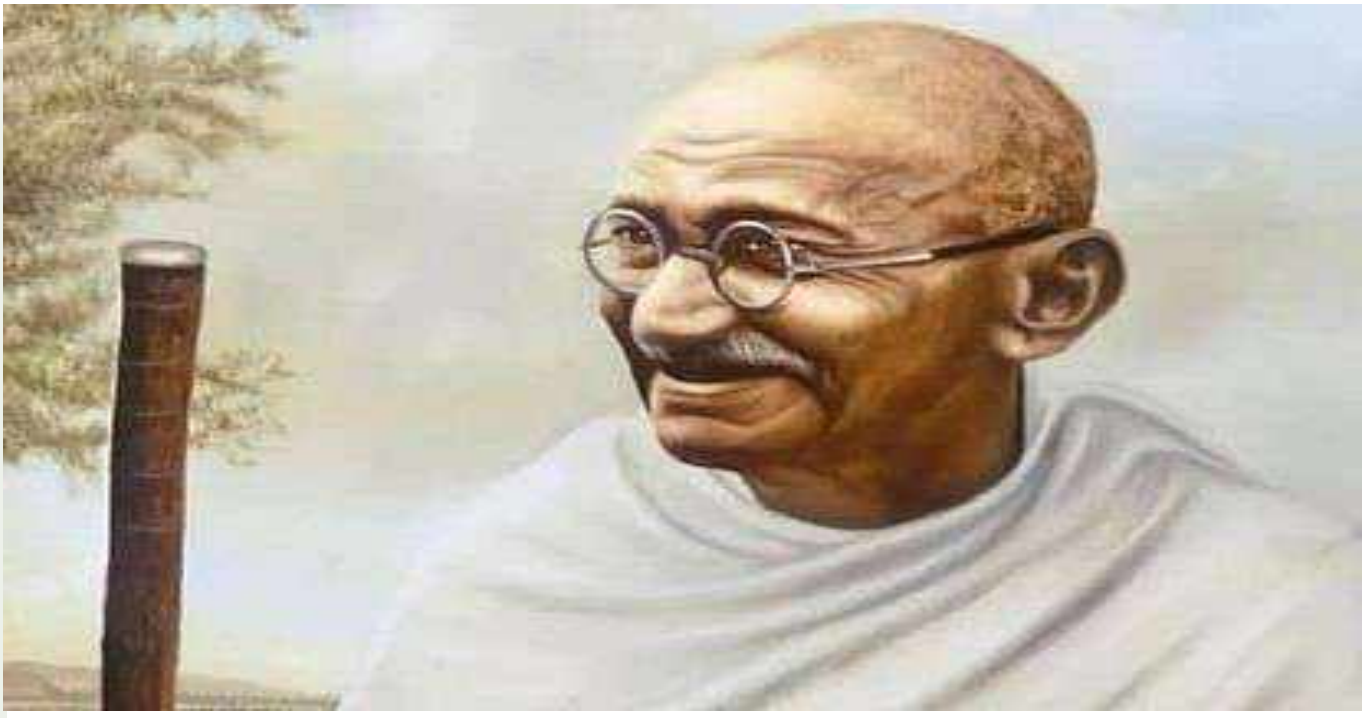

है। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन ने तो अंग्रेजी हुकूमत की चूलें हिला दीं। उस दौरान ब्रिटिश प्रधानमंत्री विन्स्टन चर्चिल से वार्ता पश्चात सम्राट जार्ज षष्ठम् ने अपनी डायरी में दर्ज किया था कि-'' विन्स्टन चर्चिल ने मुझे यह कहकर आश्चर्यचकित कर दिया है कि उनके सभी सहयोगी और संसद के तीनों दल युद्ध के पश्चात् भारत को भारतीयों के हाथों में छोड़ने को उद्यत हैं। क्रिप्स, समाचार पत्र और अमरीकी लोकमत- सभी ने उनके मन में यह भावना भर दी है कि हमारा भारत पर राज्य करना गलत है और सदैव से भारत के लिए भी गलत रहा है।'' इस प्रकार 15 अगस्त 1947 को आजादी प्राप्त कर गाँधी जी ने समूचे विश्व को दिखा दिया कि हिंसा जो सभ्य समाज के अस्तित्व को नष्ट करने का खतरा उत्पन्न करती है, का विकल्प ढूँढ़ने के लिए स्वयं की पड़ताल करने का भी एक प्रयास होना चाहिए।

गाँधी जी सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, स्वराज्य व रचनात्मक कार्यक्रमों के कायल थे। इन सभी सिद्धान्तों को उन्होंने न सिर्फ वैचारिक धरातल पर उतारा बल्कि उनमें अन्तर्सम्बन्ध भी स्थापित किया। गाँधी जी को 'महात्मा' की उपाधि से सर्वप्रथम विभूषित करने वाले रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि- ''गाँधी जी एक राजनीतिज्ञ, संगठनकर्ता, जनमानस के नेता और नैतिक सुधारक के रूप में महान हैं, परन्तु वह मनुष्य के रूप में उससे भी अधिक महान हैं। यद्यपि वह असाध्य रूप से आदर्शवादी थे और अपने निश्चित मापदण्डों द्वारा प्रत्येक कार्य को मापते थे, फिर भी वह मानव प्रेमी हैं न कि खोखले विचारों के प्रेमी।'' गाँधी जी सत्य के बहुत बड़े प्रणेता थे और इसके लिये अहिंसा के तरीकों के पक्षपाती थे। सत्याग्रह उनके लिए मात्र नीति नहीं, सिद्धान्त था। वस्तुतः सत्याग्रह के माध्यम से गाँधीजी ने महात्मा बुद्ध, महावीर व तमाम महापुरूषों द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के सिद्धान्त को सामाजिक व राष्ट्रीय शक्ति में तब्दील कर दिया। पाश्चात्य विचारक थोरो की व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा की अवधारणा को सामाजिक शक्ति में बदलकर ऐसा बेमिसाल जनजागरण पैदा किया जो दीर्घकाल तक अवश्य चलता है, पर असफल नहीं होता। स्वयं गाँधी जी का मानना था कि- ''सत्याग्रह एक ऐसा आध्यात्मिक सिद्धान्त है जो मानव मात्र के प्रेम पर आधारित है। इसमें विरोधियों के प्रति घृणा की भावना नहीं है।'' अहिंसा गाँधी जी का प्रमुख सत्याग्रही हथियार था। गाँधी जी के लिये अहिंसा, हिंसा का निषेध मात्र नहीं थी बल्कि एक जीवन पद्धति थी। वे अक्सर कहा करते थे कि आज की दुनिया में जितने लोग जीवित हैं, वे बताते हैं कि दुनिया का आधार हथियार बल नहीं है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि दुनिया इतने हंगामों के बाद भी टिकी हुई है।

गाँधी जी की अहिंसा कायरता का प्रतीक नहीं बल्कि अन्तश्चेतना व आत्मा में विश्वास करने वाली वीरता का परिचायक है। उन्होंने इसे व्याख्यायित करते हुये लिखा कि -''यद्यपि अहिंसा का अर्थ क्रियात्मक रूप से जानबूझकर कष्ट उठाना है, तथापि यह सिद्धान्त दुराचारियों के सामने हथियार डालने का समर्थन नहीं करता। इसके विपरीत यह दुराचारी का पूर्ण आत्मबल से सामना करने की प्रेरणा देता है। इस सिद्धान्त को मानने वाला व्यक्ति अपनी इज्जत, धर्म और आत्मा की रक्षा के लिए एक अन्यायपूर्ण साम्राज्य सहित समस्त शक्तियों को भी चुनौती दे सकता है और अपने पराक्रम द्वारा उसके पतन के बीज भी बो सकता है।'' बताते हैं कि जब इटली के तानाशाह मुसोलिनी के आग्रह पर गाँधी जी उससे मिलने गये, तो कईयों ने उन्हें समझाया कि एक अहिंसक व्यक्ति का हिंसक व्यक्ति से मिलना उचित नहीं। पर गाँधी जी ने जवाब दिया कि हिंसक व्यक्ति से हिंसा ज्यादा खतरनाक है और हमारा उद्देश्य सत्य व अहिंसा के माध्यम से अहिंसा को खत्म